कुमार संभव

कुमार संभव है

लक्ष्मीनारायण लाल

मग्र
है।
षा,
ारह
नहीं
क्या

पर
ों ब
कर
कर
ोधा
धक

है।
ीन
पनी
ीन

कुमार संभव है

प्रकाशक :
अजमेरा बुक कम्पनी
जयपुर-३०२००२

'कुमार संभव है' नाटक के अभिनय, प्रदर्शन, प्रकाशन, प्रसारण आदि किसी भी प्रकार के व्यावसायिक, अव्यावसायिक उपयोग के लिए लेखक की लिखित पूर्व-अनुमति अनिवार्य है ।

पता : ५४ ए, एम० आई० जी० फ्लैट,
पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-११००६३

मूल्य : ६.०० रुपये पहला संस्करण : अक्टूबर, १९८४ / कापी राइट :
© डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल / प्रकाशक : अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर /
मुद्रक : चोपड़ा प्रिंटर्स, मोहन पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

KUMAR SAMBHAV HAI : Lakshmi Narain Lal

प्रस्तावना

नाटक अपने युग के यथार्थ से परिचय कराता है। नाटक ही समग्र जीवन के प्रमुख अंशों की और एक काल-विशेष की सार्थक अभिव्यक्ति है। नाटक मानव प्रकृति का दर्पण है। इसकी कथावस्तु, इसका आकार, भाषा, रूप-रंग, वातावरण आदि एकदम समन्वित होता है। नाटक न पूरी तरह इतिहास है, न कल्पना। शुद्ध लोक-कथाएँ या कहानियाँ भी नाटक नहीं हो सकतीं। जिस साहित्य का सृजन नाटकीय एवं रंगमंचीय ढंग से किया गया हो वही नाटक है।

नाटक का महत्त्व

नाटक अभिव्यक्ति का सबल माध्यम है। इसका प्रभाव दर्शक पर सीधे-सीधे पड़ता है। रेडियो नाटकों के माध्यम से श्रोता और पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से पाठक भी नाटक के प्रभाव को पढ़-सुनकर अनुभव कर सकते हैं। जो कोई पुस्तक पढ़ नहीं सकता वह नाटक को देखकर भी समझ सकता है। मंच पर खेले जाने के कारण (दर्शकों से सीधा साक्षात्कार होने की वजह से) नाटक किसी अन्य साहित्य की अपेक्षा अधिक संप्रेषणीय होते हैं।

नाटक का प्रभाव किसी भी साहित्य की अपेक्षा अधिक गहरा होता है। अपने युग के यथार्थ से नाटक ही साक्षात्कार करवाता है। इसी से प्राचीन से प्राचीन भारतीय संस्कृति और परंपरा पुनर्जीवित होती है और अपनी सभ्यता को समझने का अवसर दर्शकों को मिलता है। संस्कृत के प्राचीन

नाटक और ऐतिहासिक नाटक दर्शकों को अलग-अलग देश-काल का ज्ञान कराते हैं। इसी तरह सामाजिक नाटकों से जीवन की जटिलता, समस्याओं और विघ्न-बाधाओं में से अपने लिए रास्ता निकाल लेने की प्रेरणा भी नाटक से मिलती है। इनके सिवा मनोरंजन का साधन तो नाटक है ही। मनुष्य को संस्कारित करने के लिए भी नाटक एक सफल माध्यम सिद्ध होता है। इस तरह नाटकों का धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक सभी तरह का महत्त्व होता है।

नाटक के तत्त्व

नाटक के तत्त्वों को लेकर प्राय: मतभेद रहा है। कुछ लोग पात्र, वस्तु-निरूपण, कार्य व प्रभाव को नाटक के प्रमुख तत्त्व मानते हैं। हम यहाँ पर कथानक, चरित्र-चित्रण, संवाद, भाषा-शैली, वातावरण, उद्देश्य और मंच सभी पर संक्षिप्त प्रकाश डाल रहे हैं। चूँकि अधिकतर मतभेद तत्त्वों की संख्या पर है अत: प्रत्येक तत्त्व के विषय में अलग-अलग जान लेना असंगत न होगा।

कथानक : परंपरागत नाटकों में तीन प्रकार की कथावस्तु मिलती है। प्रेमाख्यान या शौर्य कथाएँ तो वैदिक काल से भारतीय जीवन में प्रचलित रही हैं। प्रेमाख्यानों की उत्कट परंपरा 'स्वांग' और 'सांगीत' में विकसित हुई। नौटंकी यद्यपि अब स्वांग का ही एक रूप मानी जाती है, लेकिन वास्तव में 'नौटंकी' मुलतान की शाहजादी थी। राजस्थान के ख्याल और मालवा के 'माँच' के प्रेमाख्यानों में ऐसे भी गीति और नीति तत्त्व हैं जो 'सांग' और 'नौटंकी' में नहीं मिलते। प्रेमाख्यान की कथावस्तु में मुख्य बात यह है कि अधिकतर नाटक दु:खांत होते हैं। दूसरी चीज इन नायकों की उपदेशात्मकता है। तीसरी एक और बात है : आत्मोत्सर्ग और आदर्शात्मक प्रसंग।

संस्कृत नाटकों ने तो कथाबीज रामायण-महाभारत आदि पुराणों से ग्रहण किये ही, आज भी नाटकों में इनका सहारा लिया जाता है। विशेषकर आंचलिक नाटकों में ऐसा होता है।

पुरावृत्त और प्रेमाख्यान के अतिरिक्त आंचलिक नाटक समाज की आलोचना करने वाले प्रसंगों का भी प्रयोग करते हैं। कुल मिलाकर परंपरागत आंचलिक नाटक स्वच्छन्दता से मनोरंजन करने के साथ-साथ बौद्धिक उपदेश भी देते हैं।

कथानक के विषय में यह कहा जाएगा कि नाटक में संक्षिप्तता होनी चाहिए और अभिनय से दर्शकों में ऊब पैदा न हो। नाटक की कथा नाटककार के स्वतन्त्र व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति हो। कथावस्तु में युग-बोध हो। संक्षिप्त कथा के साथ-साथ घटनाएँ कम हों। नाटक में रहस्यात्मकता बनी रहनी चाहिए। कथा विश्वसनीय और प्रभावोत्पादक हो। इसके साथ ही सरल तथा मिश्रित और मुख्य कथा हो। नाटक में नवीनता हो। घिसे-पिटे कथानकों पर आधारित नाटक कभी सराहे नहीं जाते।

कथा में प्रवाह होना भी अनिवार्य है।

चरित्र-चित्रण : नाटक के पात्र उसके सबसे प्रमुख अंग होते हैं। यदि चरित्र-चित्रण अस्वाभाविक होगा तो नाटक की विश्वसनीयता कम हो जाएगी। अत: हर चरित्र विश्वसनीय हो। चरित्रों के ऊपर भाषा न लादी जाए, हर चरित्र के अनुरूप उसकी भाषा भी हो। विशेषकर ऐतिहासिक चरित्रों अथवा ग्रमीण पात्रों के साथ यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य पहलू है। अन्यथा ऐसे पात्र दर्शकों अथवा पाठकों के सामने अविश्वसनीय हो जाते हैं।

चरित्र भी विभिन्न प्रकार के होते हैं। जैसे, वर्ग-विशेष का प्रतिनिधित्व करने वाले, व्यक्ति-प्रधान, स्थिर चरित्र और गतिशील चरित्र। इसी तरह नायक, नायिका, स्त्री-पुरुष चरित्र और गौण पात्र भी होते हैं। जो मुख्य पात्र अर्थात् नाटक का केन्द्र होता है वह नायक कहलाता है। नाटक में केवल नायक या नायिका या दोनों भी प्रधान हो सकते हैं। बाकी सभी पात्र गौण कहलाते हैं।

नाटक की सफलता चरित्र के अंतर्पक्ष का उद्घाटन करने में भी है। हर चरित्र अपने में इतना सक्षम हो कि वह अपने निजी चरित्र के प्रत्येक पक्ष को दर्शक व पाठक अथवा श्रोता के सामने उगल दे। इसके सिवा

नाटक में अनावश्यक पात्रों की भरमार भी नहीं होनी चाहिए। गौण पात्रों को अनावश्यक बना देना और मुख्य पात्रों को अति महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए नाटक को बोझिल बना देना भी नाटक की बहुत बड़ी कमज़ोरी है।

संवाद : संवाद और चरित्र एक-दूसरे के पूरक हैं—सिक्के के दो पहलुओं की तरह। संवाद का अर्थ होता है वार्तालाप। वार्तालाप करने वाला पात्र ही होता है। फलतः संवाद से ही चरित्र भी स्पष्ट होता है। सम्पूर्ण नाटक का आधार संवाद है। वार्तालाप कमजोर हुआ कि नाटक भी कमजोर पड़ा। ऐतिहासिक नाटकों में तो पात्रों से क्लिष्ट वार्तालाप भी करवाना पड़ता है। यह ऐतिहासिकता बनाने के लिए अनिवार्य भी है। इसी तरह कई नाटकों में गँवई पात्र होते हैं और उनसे आंचलिक वार्तालाप करवाया जाता है। कई बार तो देश-काल को देखते हुए ऐसे शब्दों का प्रयोग भी अनिवार्य हो जाता है जो शब्द अब प्रायः चलन में नहीं हैं।

इसके सिवा सबसे प्रमुख बात संवाद का संक्षिप्त होना है। लम्बे संवाद उकताहट पैदा करते हैं। संवाद का काम कथानक को विकसित करना होता है। संवाद में नाटकीयता और रोचकता होना एक अनिवार्य गुण माना जाता है। संवाद से जिज्ञासा बनी रहनी चाहिए और नाटक में रहस्यात्मकता आनी चाहिए तभी उसकी सफलता है। और अन्तिम महत्त्वपूर्ण बात है—अपने सारे परिवेश को उभारकर रख देना।

भाषा शैली : नाटक की भाषा पात्रानुसार ही होती है और नाटकानुसार भी। संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी तथा आंचलिक भाषा के शब्दों का प्रयोग भी आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। भाषा तत्सम-प्रधान भी हो सकती है और तद्भव-प्रधान भी। अलंकारों का प्रयोग भाषा को प्रभावपूर्ण बनाता है। नए शब्दों का प्रयोग भी नाटक को प्राणवान् बना देता है। लक्षणा व व्यंजना शक्ति के द्वारा भाषा चित्रमय बनती है।

विशेष रूप से ऐतिहासिक नाटकों में भाषा पात्रानुसार रखनी होती है। देश-काल के अनुसार ही भाषा भी होनी चाहिए। उसी तरह ग्रामीण पात्रों से नाटककार गँवई भाषा बुलवाता है। इसीसे नाटक का प्रवाह और विश्वसनीयता बढ़ती है। यद्यपि भाषा का सरल होना अनिवार्य

माना जाता है, लेकिन पात्रों के चरित्र के अनुसार, उनकी संस्कृति के अनुसार भाषा क्लिष्ट भी हो सकती है।

वातावरण : वातावरण को पर्यावरण और देश-काल भी कहते हैं। कोई नाटक अपने समय की कैसी तस्वीर पेश करता है यह तो महत्त्वपूर्ण है ही, उसके साथ ही, उस काल-विशेष के धर्म, संस्कृति, सभ्यता, वेश-भूषा, वार्तालाप, सामाजिक स्थितियाँ, घटनाएँ, तथ्य आदि भी इस रूप में प्रस्तुत किये जाने चाहिएँ कि नाटक पढ़ते ही उस समय की एक तस्वीर आँखों के आगे आ जाए। यदि रंगमंच पर नाटक खेला जा रहा हो तो उसमें विश्वसनीयता और प्रभावोत्पादकता की झलक मिले। विशेषकर ऐतिहासिक नाटकों में वातावरण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। एक काल-विशेष को मूर्त करने के लिए नाटककार को वातावरण पर सर्वाधिक ध्यान देना होता है।

वातावरण प्रायः दो प्रकार का माना जाता है—बाह्य वातावरण और आंतरिक या मानसिक वातावरण। नाटक की सफलता के लिए दोनों वातावरणों की प्रस्तुति सटीक होनी चाहिए। सही रूप में देखा जाए तो कभी-कभी एक वर्ष के भीतर ही सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण में परिवर्तन हो जाता है। नाटक की सफलता इसी बात में है कि जिस काल-विशेष के सन्दर्भ में वह लिखा गया है उसकी हूबहू तस्वीर दर्शकों-पाठकों के सामने रख दे।

उद्देश्य : नाटक मनोरंजन का साधन-मात्र नहीं है। बल्कि नाटक का उद्देश्य मानव की उदात्त भावनाओं को झकझोरना और जगाना है। सीधे-सीधे उपदेश देना तो किसी उपदेशक का ही काम हो सकता है। नाटक उपदेश की माँग न करके भी विभिन्न चरित्रों द्वारा कर्म की प्रेरणा देता है। जीवन के विभिन्न पक्षों, अन्तर्द्वन्द्वों, समस्याओं आदि को दर्शक व श्रोता के सामने रख देना और उन्हें विचारने के लिए विवश कर देना भी नाटक का उद्देश्य है। प्राचीन इतिहास में हमें अपनी कई दुर्बलताएँ दिखाई देती हैं। नाटक का उद्देश्य वे सारी सामाजिक, राजनीतिक एवं निजी कमजोरियाँ पाठकों-दर्शकों को दिखाना भी है—जिससे हम पुरानी भूलें

दोहराने से बच सकें। इसी तरह की भूलें वर्तमान में भी हो रही हैं। नाटक का उद्देश्य अप्रत्यक्ष रूप से उन भूलों को सुधारने पर बल देना भी है।

इस प्रकार यह मानना पड़ेगा कि प्रायः नाटककार नाटक की रचना निरुद्देश्य नहीं करता।

मंच

मंच नाटक खेले जाने वाली जगह है। सही अर्थों में नाटक की कसौटी ही मंच है। हिन्दी का मंच पहले की अपेक्षा आज बहुत कुछ विकसित होने के बावजूद भी अव्यावहारिक ही बना हुआ है। बड़े शहरों और महा-नगरों में अब धीरे-धीरे अर्ध-व्यावसायिक और व्यावसायिक रंगमंच भी उभर रहे हैं। लेकिन रंगमंच की प्रौढ़ता तभी सामने आ सकती है जबकि रंगमंच व्यावसायिक रूप धारण करें।

मंच पर उतरकर ही नाटक पूर्णता प्राप्त करता है। किसी नाटक-कार की व्याख्या सफल तभी होती है जबकि नाटक को सफलता के साथ रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाए। दृश्य-काव्य का अर्थ ही 'दिखाया जाने वाला काव्य' है। नाटक का सम्पूर्ण कथा-विन्यास, उसका अंकों व दृश्यों में विभाजन तथा दृश्य-विधान आदि की पृष्ठभूमि में रंगमंच ही निहित रहता है। यहाँ तक कि मंच को भूलकर नाटक नहीं रचा जा सकता। जो नाटक दर्शकों तक नहीं पहुँचता वह अनुपयोगी है।

प्रस्तुतीकरण पक्ष, दर्शक, निर्देशक, अभिनेता, सज्जा, प्रकाश, संगीत आदि रंगमंच के मुख्य अंग हैं।

रामलीला, रासलीला, नौटंकी, स्वांग इत्यादि लोकमंच हैं। भारतीय रंगमंच का अर्थ प्राचीन संस्कृत नाट्य-परम्परा ही नहीं बल्कि भारत की विभिन्न भाषाओं का रंगमंच है। हिन्दी रंगमंच भारतीय रंगमंच का एक भाग है। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध से लेकर बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक तक हिन्दुस्तानियों के मन-मस्तिष्क में पारसी रंगमंच भी छाया रहा। पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी रंगमंच पर नृत्य-नाटकों का प्रदर्शन भी हुआ है।

रंगमंच की एक नयी प्रवृत्ति संस्कृत नाटकों के अनुवादों और रूपांतरों के प्रदर्शन की भी बनी है। दूसरी भाषाओं के अनूदित नाटक तो रंगमंच पर उतरे ही हैं, साथ ही आजकल कहानियों को भी ज्यों-का-त्यों रंगमंच पर उतारने का प्रयोग शुरू हुआ है।

फिर भी नाटक की सफलता का प्रधान कारण उसका यांत्रिक होना है और नाटक का यांत्रिक रूप रंगमंच ही है। हमारा प्राचीन रंगमंच कैसा रहा, इस सम्बन्ध में तो अधिक सामग्री उपलब्ध नहीं है; किन्तु यह कहना न्यायसंगत होगा कि आधुनिक भारतीय रंगमंच अभी बहुत पिछड़ा हुआ है। दसवीं शताब्दी के बाद हमारे देश में नाटकों की परम्परा का लगातार ह्रास हुआ है। इधर स्वतंत्रता के बाद, बेशक, फिर नाटकों का विकास शुरू हुआ है, किन्तु फिर भी रंगमंच ज्यों-का-त्यों है। कम-से-कम हिन्दी रंगमंच तो शौकिया रंगमंच है। जबकि पश्चिम का रंगमंच यांत्रिक विकास के साथ बहुत अधिक विकसित हो चुका। कृत्रिम उपायों से रंगमंच को जीवन्त बना दिया जाता है। प्रकाश की आधुनिक व्यवस्था से भावना को सजीव रूप दिया जाने लगा है। मंच के संवाद ही नहीं, पश्चिमी रंगमंच तो एक आह और एक निःश्वास को भी दर्शकों के कानों तक पहुँचा देता है। हिन्दी में घूमने वाला रंगमंच भी नहीं है।

लेकिन फिर भी हमारा नाटक और रंगमंच विकास की ओर उन्मुख है।

□

हिन्दी नाटक का विकास

संस्कृत में नाट्य-साहित्य बहुत ही समृद्ध है फिर भी हिन्दी में नाटकों की रचना नहीं हुई। विद्वानों ने इसके लिए अनेक कारण बताए हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि हमारे यहाँ राष्ट्रीय रंगमंच न था, अन्य लोग नाटक का अभाव गद्य साहित्य की हीनता के कारण बताते हैं और तीसरे पक्ष के लोग इसका कारण मुसलमान शासकों का विरोध बताते हैं, क्योंकि इस्लाम के सिद्धान्तों के अनुसार किसी की नकल उतारना पाप है माना गया है। ये तीनों ही कारण किसी अंश तक ठीक हो सकते हैं, परंतु ये वास्तव में गौण कारण हैं।

हिन्दी नाटक के जन्म को साथ ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे प्रतिभाशाली और प्राणवान् कलाकार का आश्रय प्राप्त हुआ। फलतः आरंभ से ही उसका बहुमुखी विकास प्रारंभ हो गया।

उन्नीसवीं शती में पौराणिक और ऐतिहासिक धारायें प्रबल रहीं। इसमें रासलीला और रामलीला के अत्यधिक प्रचार का विशेष योग है। उन्नीसवीं शती के मध्यकाल में लिखे गये नाटक जैसे विश्वनाथ सिंह जी रीवां नरेश का 'आनंद रघुनंदन', मंजु का 'हनुमान नाटक', कृष्ण शर्मा साधु का 'रामलीला विहार नाटक', हरिराम का 'जानकी चरित्र', गोपालचन्द्र का 'नहुष' आदि इस बात के यथेष्ट प्रमाण हैं कि रामलीला आदि से प्रभावित धार्मिक जनता प्रारम्भ में पौराणिक नाटकों की ओर स्वाभाविक रूप से उन्मुख हुई।

ऐतिहासिक धारा का प्रणयन भी भारतेन्दु के 'नीलदेवी' नाटक से हुआ। परंतु इस धारा की दृष्टि से यह काल विशेष संपन्न नहीं कहा जा सकता। लाला श्रीनिवास दास का 'संयोगिता स्वयंवर' (१८८५), रायकृष्ण दास का 'महारानी पद्मावती' (१८८३) और 'महाराणा प्रताप सिंह' (१८९७), काशीनाथ खत्री का 'सिन्धु देश की राजकुमारियाँ' और 'गुन्नौर की रानी', शालिगाम का 'गुरु विक्रम' आदि कुछ गिने-चुने नाटक ही इस काल में लिखे गए।

इस धारा में कला का चरम विकास प्रसाद के नाटकों में हुआ। प्रसादजी के प्रमुख ऐतिहासिक नाटक हैं—'राज्यश्री' (१९१५), 'विशाख' (१९२१), 'अजातशत्रु' (१९२२), 'जन्मेजय का नागयज्ञ' (१९२६), 'स्कन्दगुप्त' (१९२८), 'चन्द्रगुप्त' (१९३१)। यद्यपि लक्ष्मीनारायण मिश्र का प्रथम सामाजिक नाटक 'संन्यासी' १९२७ में प्रकाशित हो गया था तथापि मिश्रजी के सामाजिक नाटकों के समकालीन होने के कारण स्कन्दगुप्त और चंद्रगुप्त का विवेचन होने पर भी पूर्व परंपरा के अंतर्गत करना ही समचीन समझा गया है। प्रसादजी के नाटकों में इतिहास के पृष्ठाधार पर सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि विभिन्न स्वरूपों की उज्ज्वल झाँकियां प्रस्तुत की गईं। उनके व्यापक जीवन दर्शन और निगूढ़ युग संदेशों ने उनकी विषय-वस्तु को नवीन महत्त्व प्रदान किया।

प्रसाद के अनंतर उसी प्रकार की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना की निरूपण प्रवृत्ति हरिकृष्ण प्रेमी, गोविंदवल्लभ पंत, उदयशंकर भट्ट, चद्रगुप्त विद्यालंकार, लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि लेखकों के ऐतिहासिक नाटकों में पाई जाती है। किंतु इन नाटककारों में प्रसाद जैसी महान् प्रतिभा नहीं दृष्टिगत होती है। फिर भी इन सभी नाटककारों का हिन्दी नाट्य साहित्य में विशिष्ट स्थान है और इनकी कृतियों से हिन्दी नाट्य साहित्य समृद्ध एवं संपन्न हुआ है। प्रसादोत्तर नाट्य साहित्य की विशेष कृतियाँ हैं—'रक्षाबंधन', 'शिवासाधना' (१९३७) 'प्रतिशोध', 'स्वप्नभंग' (१९४०), 'आहुति' (१९४०), 'विषपान' (१९४५), 'उद्धार' (१९४९), 'शपथ' (१९५१), 'प्रकाश स्तंभ'।

इन नाटक धाराओं को प्रभावित करने वाली दो धारायें हैं पारसी

रंगमंचीय धारा और दूसरी अनुवाद की धारा। पारसी रंगमंच का आगमन भारतवर्ष में हिन्दी के साहित्यिक नाटकों के आविर्भाव के साथ ही हुआ। १८७० ई० में 'ओरिजिनल थियेट्रिकल कंपनी' की स्थापना हुई। इस परंपरा ने घरेलू रंगमंच के स्थापन पर 'शेक्सपीरियन रंगमंच' की भारतीय वातावरण के अनुकूल प्रस्थापना की। नाटकों का वातावरण उर्दू काव्य की शोखी, छेड़छाड़ और शरारत तथा बाजारू प्रेम रखा, कथानक फारसी की प्रेमकथाओं, अंग्रेजी साहित्य की रोमांचकारी घटनाओं, नाटकों और आख्यानों तथा पुराणों की मनोरंजक कथाओं से लिये, मनोरंजन की सामग्री जनता में प्रचलित वेश्याओं के नाच-गानों तथा भांडों से उधार लीं। इस परंपरा में धनोपार्जन के लक्ष्य में नाट्यकला का वास्तविक स्वरूप न उभर सका। इससे एक हानि यह हुई कि जनसाधारण में नाटकों के प्रति आरंभ से एक गलत धारणा बन गई और वे इसे अनैतिक भावनाओं का प्रेरक तथा विलास की सामग्री मानने लगे। इसी संस्कार के कारण राष्ट्रीय रंगमच न बन सका और उसी के फलस्वरूप साहित्यिक नाटकों का विकास भी द्रुतगति से न हो पाया। इस धारा में बीसवीं शताब्दी में आकर जनसाधारण को आकृष्ट करने के लिए पौराणिक आख्यानों को भी आधार बनाया गया। परंतु कला के स्वरूप में विशेष अंतर न आया। आगे चलकर चलचित्र के निर्माण के कारण तो इसका विकास ही मंद पड़ गया।

स्वतंत्रता के बाद जगदीशचंद्र माथुर का नाटक 'कोणार्क' (१९५१), लक्ष्मीनारायण लाल का 'अंधा कुआँ' (१९५६), 'मादा कैक्टस' (१९५७), मोहन राकेश का 'आषाढ़ का एक दिन', धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' ये वे नाट्य कृतियाँ हैं, जो नाटक और रंगमंच इन दोनों दृष्टियों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इन नाटकों से वास्तविक रूप में हिन्दी नाटक और रंगमंच को आधुनिकता प्राप्त होती है। लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा स्थापित इलाहाबाद में 'नाट्य केन्द्र', 'स्कूल ऑफ ड्रैमेटिक आर्ट्स', दिल्ली में 'नेशनल स्कूल आफ ड्रामा', कलकत्ता में 'अनामिका', बंबई में 'थियेटर

यूनिट', कानपुर में 'दर्पण' आदि रंग संस्थाओं से हिन्दी नाट्य क्षेत्र में नये 'रंग काल' का शुभारम्भ होता है। इन संस्थानों से जो महत्त्वपूर्ण नाट्य कृतियाँ, हिन्दी नाट्य जगत् को प्राप्त हुईं इनके नाम हैं—'अंधायुग', 'लहरों के राजहंस', 'आधे-अधूरे', 'एक सत्य हरिश्चन्द्र', 'सूर्यमुख', 'व्यक्तिगत', 'आठवाँ सर्ग' और 'कुमार संभव हैं'।

□

नाटक, एकांकी और ध्वनिरूपक में अन्तर

संस्कृत साहित्य शास्त्र में 'रूपक' दृश्य काव्य को कहा गया है। रूपक के दस भेद हैं—नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, बीथी, अंक और ईहामृग। यद्यपि नाटक रूपक का एक भाग है लेकिन व्यवहार में नाटक को रूपकथा, रूपक को नाटक भी कह दिया जाता है।

नाटक का अर्थ है किसी चीज को प्रस्तुत करना अथवा सामने लाना। नाटक में कई अंक होते हैं। नाटक को अनेकांकी भी कहते हैं।

एकांकी नाटक और ध्वनिरूपक का उद्देश्य तो एक होता है, लेकिन कलेवर की दृष्टि से नाटक का चित्रपट बहुत बड़ा है। ध्वनिरूपक बड़ा और एकांकी प्रकार का भी हो सकता है। नाटक में पात्र भी अधिक होते हैं और उसको पढ़ने अथवा प्रदर्शित करने में समय भी अधिक लगता है। एकांकी समस्या के एक ही पहलू पर केन्द्रित होता है। एकांकी शिल्प-प्रधान भी होते हैं और विषय-प्रधान भी। एकांकी का आकार संक्षिप्त होता है। शिल्पगत नवीनता-नई तकनीक आदि इसमें अधिक देखने को मिलती हैं। एकांकी की तकनीक पाश्चात्य है।

इस प्रकार 'एकांकी' साहित्य की वह विधा है जिसके द्वारा जीवन के किसी एक सूक्ष्म पहलू, स्थिति, घटना अथवा एक भाव की कलापूर्ण अभिव्यक्ति होती है।

एकांकी उसी तरह नाटक से भिन्न है जिस तरह कहानी उपन्यास से।

एकांकी के कथानक का विकास अनेकांकी नाटकों की तरह नहीं होता। बड़े नाटकों में पाँच कार्य व्यवस्थायें होती हैं—प्रारम्भ, कार्य, विकास, चरम निगति और समाप्ति। जबकि एकांकी तेजी से चरम लक्ष्य पर पहुँच जाता है। अनेकांकी में ऐसी गति नहीं होती।

बड़े नाटक में कार्यारम्भ और फलागम के बीच पर्याप्त अंतराल होता है। तकनीक और उद्देश्य दोनों दृष्टियों से नाटक और एकांकी में अन्तर है।

एकांकी का वर्गीकरण काव्य-एकांकी, एकपात्रीय एकांकी और रेडियो एकांकी के रूप में किया जाता है। एक तरह से एकांकी छोटे-छोटे कस्बों, साधनहीन नाट्य संस्थाओं और स्कूल-कालेजों की रंगमंचीय कार्यकलापों तक सीमित हैं। वैसे एकांकी नाटक दर्शकों और रंगमंच के बीच की दूरी कम करने में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। एकांकी नाटकों का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि इनके जरिये कम समय में कार्य, स्थान और समय अन्विति कायम हुई है। एकांकीकारों ने भी अति साहित्यिक, बोझिल और लंबे तथा पारसी रंगमंच को एक नई चीज दी। एकांकी का उदयकाल सन् १९३० के आस-पास माना जाता है।

□

नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल और उनकी कृतियों का परिचय

लक्ष्मीनारायण लाल आधुनिक हिन्दी साहित्य के परम महत्त्वपूर्ण नाटककार, कथाकार और साहित्य के विभिन्न अंगों के मर्मज्ञ और कला-जीवन के चिंतक हैं। इन्होंने मौलिक साहित्य-सृजन के साथ ही साथ जीवन के प्रमुख पक्षों, प्रश्नों के चिन्तन में महत्त्वपूर्ण योग दिया है।

जयशंकर प्रसाद के बाद मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल ही वे दो नाटककार हुए हैं, जिन्होंने सही और संपूर्ण अर्थों में हिन्दी नाट्य को आधुनिक बनाया। विशेषकर 'लाल' का नाम इसलिए सर्वाधिक उल्लेखनीय है कि इन्होंने अपने नाटकों द्वारा एक ओर भारतीय रंगमंच की जीवन्त परम्पराओं, प्रेरणाओं को अपने नाट्य लेखन में नए संदर्भ दिए। दूसरी ओर इन्होंने भारत के 'नाट्य' को, उसके रंगमंच की प्रकृति को गहराई से समझकर देखा है। इन्होंने भारतीय और पाश्चात्य नाट्य के

समन्वय के विश्वास का खण्डन किया है। इनका कहना है कि पूर्व और पश्चिम का कभी भी समन्वय नहीं हो सकता। विशेषकर कला और साहित्य-सृजन के क्षेत्र में।

जीवन परिचय : लक्ष्मीनारायण लाल का जन्म चार मार्च, उन्नीस सौ सत्ताइस में उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के एक गाँव जलालपुर में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के स्कूल में और हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट शिक्षा, बस्ती शहर में प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम० ए० और हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि पर सन् बावन में डाक्ट्रेट। इसके बाद प्रयाग विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय के कालेजों में अध्यापक होकर विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय शिक्षा और अनुसंधान कार्य में महत्त्वपूर्ण योग दिया। इस बीच कुछ दिनों के लिए आकाशवाणी में ड्रामा प्रोड्यूसर। उन्नीस सौ चौंसठ में विश्व नाटक सम्मेलन, रूमानिया, में भारतवर्ष की ओर से अकेले नाटककार के रूप में प्रतिनिधित्व किया। नेशनल ग्रीक थियेटर, एथेंस में आमन्त्रित किये गये। इलाहाबाद में 'नाट्य केन्द्र', 'स्कूल ऑफ ड्रैमेटिक आर्ट्स' की स्थापना और इनके द्वारा उनके संचालन और निर्देशन ने हिन्दी क्षेत्र में नाटक और रंगमंच के प्रति लोगों में गहरी रुचि पैदा की। अनेक अभिनेता, निर्देशक नाट्य केन्द्र, इलाहाबाद से रंग संस्कार और प्रशिक्षण लेकर हिन्दी रंगमंच के क्षेत्र में कार्यरत हुए।

दिल्ली में 'संवाद' रंगमंच संस्था का निर्माण कर और दिल्ली विश्वविद्यालय में एम० ए० हिन्दी के पाठ्यक्रम में नाट्यक्रम और रंगमंच का प्रशिक्षण और अध्यापन की स्थापना कर डॉ० लाल ने राजधानी में गम्भीर रंग कार्य किया।

कृतियाँ : 'मादा कैक्टस' नाट्य कृति के साथ लाल ने हिन्दी नाट्य क्षेत्र में पदार्पण किया। इसके पूर्व कुछ एकांकी लिखकर अपने विद्यार्थी जीवन से ही इन्होंने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। विशेषकर डॉ० रामकुमार वर्मा, वृन्दावन लाल वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र और उपेन्द्रनाथ अश्क का ध्यान। विद्यार्थी जीवन में लिखे हुए वे एकांकी नाटक क्रमशः

'ताजमहल के आंसू' और 'पर्वत के पीछे' एकांकी संग्रहों में संगृहीत हैं।

नाट्य केन्द्र, इलाहाबाद के जीवन काल में 'सुन्दर रस', 'रातरानी', 'दर्पण' और 'रक्तकमल' नाटकों की रचना की। ये नाटक पूरे हिन्दी क्षेत्र में प्रस्तुत होने लगे। कलकत्ता, बम्बई और दिल्ली के प्रसिद्ध नाट्य संस्थाओं में जैसे अनामिका (कलकत्ता), थियेटर यूनिट (बम्बई), दर्पण (कानपुर), यान्त्रिक (दिल्ली) आदि ने इन नाटकों को प्रस्तुत किया।

दिल्ली जीवन काल में क्रमशः 'कलंकी,' 'मिस्टर अभिमन्यु,' 'करफ्यू', 'सूर्यमुख,' 'सगुन पंछी' 'अब्दुल्ला दीवाना,' 'एक सत्य हरिश्चन्द्र, 'व्यक्तिगत' की रचना की। ये नाटक नेशनल स्कूल आफ ड्रामा, अभियान, एल० टी० जी०, यान्त्रिक जैसे प्रसिद्ध रंगदलों द्वारा खेले गए। इन नाटकों के अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए। और इस तरह पठन-पाठन और प्रदर्शन इन दोनों स्तरों से लक्ष्मीनारायण लाल अखिल भारतीय स्तर के परम महत्त्वपूर्ण नाटककार के रूप में सर्वत्र स्थापित हुए। १९७७ में राष्ट्रपति द्वारा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और १९७९ में साहित्य कला परिषद्, दिल्ली प्रशासन द्वारा समानित किए गए।

मौलिक नाट्य रचना के साथ ही साथ रंगमंच प्रदर्शन, निर्देशन से गहरे रूप में सम्बद्ध रहने के कारण डॉ० लाल ने रंगमंच अनुसंधान क्षेत्र में चार महत्त्वपूर्ण ग्रंथ दिए—'रंगमंच और नाटक की भूमिका', 'पारसी-हिन्दी रंगमंच', 'आधुनिक हिन्दी रंगमंच और नाटक', और 'रंगमंच : देखना और जानना'।

१९७० में दिल्ली विश्वविद्यालय छोड़कर, कुछ ही दिनों में 'नेशनल बुक ट्रस्ट' में सम्पादक पद से त्यागपत्र देकर डॉ० लाल पूर्णतः स्वतन्त्र लेखक हैं। नाटक के अलावा कथा साहित्य में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान है। आपकी औपन्यासिक कृतियों में 'मन-वृन्दावन,' 'प्रेम : अपवित्र नदी,' 'हरा समन्दर गोपी चन्दर,' 'बड़ी चम्पा, छोटी चम्पा' और 'पुरुषोत्तम' बहुत प्रसिद्ध हैं।

□

'कुमार संभव है' नाटक के बारे में

किसी भी देश, जाति या समाज के इतिहास में पराजय के क्षण का एक अलग ही महत्त्व होता है। यही वह क्षण है जिसे आधार बनाकर उस समाज के बाहरी ढाँचे और आंतरिक संकटग्रस्त मानसिकता का गहन विश्लेषण किया जा सकता है। पराजय का क्षण है, १८५७ के सिपाही विद्रोह की असफलता। 'कुमार संभव है' नाटक की कथावस्तु है इस असफलता की संकटग्रस्त मानसिकता। नाटक की कथाभूमि है अवध, जिस पर उस समय शासन कर रहे थे वाजिदअली शाह। और इस सम्पन्न भूमि पर कुटिल दृष्टि थी अंग्रेजों की। अंग्रेज संख्या में कम थे, हिन्दुस्तानी सैनिक वीरता और पराक्रम में अद्वितीय थे, फिर भी हिन्दुस्तानी क्यों हारे ? क्या मानवीय इतिहास, नियति का कोई चक्र उस समय गोरी उपनिवेशवादी शक्तियों के पक्ष में घूम रहा था ? क्या जय और पराजय के पीछे आचार और मर्यादा के कुछ निरन्तर मूल्य रहा करते हैं जिनको तत्कालीन हिन्दुस्तानी समाज पहचान नहीं पाया था ? इन प्रश्नों का उत्तर अनेक बार वह इतिहासकार नहीं दे पाता जो जय और पराजय को केवल राजनीतिक घटनाचक्र मानता है।

इन प्रश्नों को सृजनात्मक दृष्टि से नाटककार ने 'कुमार सम्भव है' नाटक में गहरे सन्दर्भों के साथ दर्शक और पाठकों के बीच दिखाया है और इनके अर्थ ढूँढ़ने की सार्थक कोशिश की है।

इस नाटक में पाँच महत्त्वपूर्ण पात्र हैं। राना बाबा, राजकुमार, राना बेनीमाधव, हंसगौरी और सूरजसिंह। इन्हीं मुख्य पात्रों को लेकर इस नाटक की रचना हुई है। पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पात्र हैं राना बाबा। वह १८५७ की घटनाओं में अपने पुत्र और पौत्र के माध्यम से सहभागी थे। लेकिन वे पराजय से निराश नहीं हुए थे। बल्कि उन्होंने क्रान्ति का व्यापक स्थायी आधार स्थापित किया, अपने पौत्र राजकुमार के मानस में। राना बाबा इस नाटक के समस्त घटना क्रम के पीछे सामाजिक मूल्यों के शाश्वत ह्रास को स्पष्ट देख रहे हैं।

वास्तव में इस नाटक के सभी प्रमुख पात्र एक बड़े रूपक को चरितार्थ कर रहे हैं। राना बेनीमाधव अतीत और वर्तमान के बीच का संक्रमण हैं; जिनमें उस भोगविलासी संस्कृति के प्रति समर्पण भी है और बाद में एक राजपूती आन-बान से फिरंगियों के दाँत खट्टे कर देने की महान् वीरता भी। वे अपने जीवन काल में ही किम्वदन्ती बन जाते हैं। अवध के लोक-मानस और लोकगीतों के महान् नायक। सूरजसिंह उनका विलोम है, अंग्रेजों का नया पिट्ठू, जमींदार वर्ग का प्रतीक। अतीत और वर्तमान के समक्ष भविष्य के प्रतीक हैं युवा निर्वासित राजकुमार—सूरजसिंह के दामाद, राना बेनीमाधव के उत्तराधिकारी पुत्र जिन्हें उत्तराधिकार में मिले हैं पराजय और निर्वासन। राना बाबा इन सबसे परे, कालचक्र में एक आरे की तरह जुड़े, लेकिन कालचक्र को तटस्थ दृष्टि से आर-पार देखते हुए उसका अर्थ समझते हुए। पराजय के क्षण में जब महल में अंग्रेज लूट-पाट और हत्याएँ कर रहे हैं उस समय अँधेरे में, इस अँधेरे का अर्थ निर्वासित युवा राजकुमार को समझाते हुए।

इस नाटक में ऐतिहासिक हार का सनातन कारण ढूँढा गया है। पर इस नाटक की सबसे बड़ी विशेषता है इसका आशावाद। 'कु' को, इस पराजय और निर्बलता के बावजूद 'मारना' 'सम्भव' है।

लक्ष्मीनारायण लाल का यह नाटक, 'कुमार सम्भव है', सही अर्थों में रूपक है। रूपक तत्त्व नाटक की बड़ी विशेषता है। यही तत्त्व नाटक को गहरे अर्थ देता है। इसी से चरित्र को पात्रता मिलती है। तभी इस नाटक में चरित्र पात्र होकर आये हैं।

हजारों वर्ष से एक निर्वासित, संयमी, शीलवान्, युवाराज कुमार की

छवि अवध की वेदनाग्रस्त विद्रोही मानसिकता की आश्रय-छवि बन गयी है। शायद उसी दिन से जब राम को चौदह वर्ष का वनवास मिला था, अयोध्या;अवध—पूरा भारतवर्ष उनके बिना सूना लगने लगा था। जातीय इतिहास की उसी चिरसंचित वेदनाभाव पर यह नाटक आधारित है। जब-जब देशी या विदेशी अत्याचारी का भूल्य न सह पाने के कारण अवध का शीलवान् मर्यादा-निर्वाही कान्यकुब्ज ब्राह्मण या निम्न वर्ग का दस्तकार या अकाल पीड़ित हिन्दू-मुस्लिम किसान अपने घर से बेघर होता है, मजबूरी में पवित्र अवध भूमि छोड़कर जाना चाहता है तो वह इसी लोक-गीत को प्रतिध्वनित करता है: "जननी, बिनु राम हम ना अवध मा रहिबे।" और इस अत्याचार और पराजय के दौरान वह बार-बार गुन-गुनाता है : "आज मोहिं रघुवर की सुधि आई। सावन गरजे भादों बरसे पौन बहे पुरवाई। कौन बिरछ तर भीजत होई हैं राम लखन दोऊ भाई।" सामाजिक और राजकीय अन्याय से ग्रस्त होकर अपनी मातृभूमि और अपनी विचारभूमि से सर्वहारा निर्वासन यह मानो अवध की स्थायी नियति बन गई है। १८५७ में भी अवध हारा ही इसलिए कि वहाँ सब कुछ था केवल राम नहीं था। यानी शील नहीं था, मर्यादा नहीं थी, समृद्धि नहीं थी। राना बेनीमाधव का पुत्र राजकुमार पुनः उस मर्यादा भूमि में लौटने और समस्त प्रयोजनों को लौटाने के प्रति कृतसंकल्प होता है।

लक्ष्मीनारायण लाल की एक और सक्षम, उद्देश्यपूर्ण, आदर्शमय नाट्यकृति।

□

नाटक के अध्यापकों के लिए सुझाव

'कुमार संभव है', नाटक पढ़ाते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

नाटक पढ़ाते समय नाटक और नाटक के महत्त्व के विषय में पढ़ाना छात्रों के हित में होगा।

नाटक के तत्त्वों के विषय में पढ़ाना भी उपयोगी होगा।

छात्रों को नाटक, एकांकी और ध्वनि-रूपक का अंतर समझाएँ।

'हिन्दी नाटक के विकास' को संक्षेप में समझाएँ।

'आधुनिक हिन्दी नाटक' का परिचय भी छात्रों को अवश्य दे।

'कुमार संभव है' नाटक का मूल विषय पहले ही बता देना छात्रों के हित में होगा।

विभिन्न छात्रों द्वारा विभिन्न चरित्रों के संवाद पढ़े जाएँ और सबका आपस में सम्बन्ध स्थापित किया जाए।

नाटक पढ़ाने के बाद इसके विषय, इसकी समस्या और चरित्रों के प्रति विचार-विनिमय छात्रों के लिए महत्त्वपूर्ण होगा।

इस नाटक को छात्रों द्वारा मंच पर अभिनीत किया जाए अथवा कक्षा के अन्दर खेला जाए। इससे छात्र नाटक को अनुभव करेंगे और अनुभव करने से नाटक अच्छी तरह समझा जा सकता है।

यह नाटक पढ़ाते समय इस नाटक का रंगमंचीय पक्ष समझाते रहना आवश्यक है।

□

कुमार संभव है

पात्र

पुरुष पात्र	स्त्री पात्र
राजकुमार	हंसगौरी
गंगादीन	सोनपत्ती
बाबा	
राना बेनीमाधव	
सूरजसिंह	
खेवट	
दुलीराम	
दुआशाह	
अंग्रेज अफसर	
कुछ लोग	
कुछ सिपाही	

काल : उन्नीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध ।
स्थान : अवध क्षेत्र का एक गाँव—शंकरपुर ।

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान : खुला मैदान
समय : प्रात: काल ।

(पृष्ठभूमि में बिगुल बजने का संगीत । सिपाहियों का चलना । राजकुमार और गंगादीन—ये दो गाँव के नव-युवक दौड़ते हुए आकर पृष्ठभूमि में देखने लगते हैं ।)

राजकुमार : वह देखो...वो, अंग्रेज कम्पनी की लश्कर ।

गंगादीन : कम्पनी की फौज ।

राजकुमार : कर्नल स्लीमैन की लश्कर ।

गंगादीन : राजकुमारजी, कर्नल स्लीमैन कौन है ?

राजकुमार : वह है, वह, लश्कर की सलामी ले रहा है । चारों तरफ तम्बू लगे हैं । गाँव गढ़ी की भीड़ चारों ओर डरी हुई खड़ी है । इतना डर कम्पनी का ! अवध के नवाब की फौज कहाँ गयी ?

गंगादीन : नवाबी के ऊपर है फिरंगी फौज । नवाब के सिपाही भीगी बिल्ली की तरह खड़े हैं, गरीब मर चुके । कम्पनी का सिपाही, देखो भइयाजी—

ठाठदार वर्दी। चमचम बूट, बटन, पग्गड़, बन्दूक, तावदार मँछ...!

कुमार : सुनो-सुनो...देखो। मेम हँस रही है। जैसे खून का दरिया दिखायी दे रहा है।

गंगा : इ अंग्रेज लश्कर हम पंचन का इन्तजाम करने आयो है।

कुमार : मेरे राना बाबा ने बताया है—बहाना है मुआइना का, इंतजाम का, असली मकसद है अवध को मुट्ठी में कसकर पूरे हिंदुस्तान को हड़प लेना।

गंगा : वह देखो, वो।

(मार्च करते हुए एक सिपाही का आना)

आही आही आही
कम्पनी का सिपाही।
कभी सुख कभी दुख
अंग्रेज का नौकर
कम्पनी बहादुर का चाकर
कभी दुख कभी सुख हो रामा...।

गंगा : हो रामा।

कुमार : चुप!

(सिपाही मार्च करता हुआ गाता है। गंगादीन उसके स्वर में स्वर मिलाता है।)

सिपाही : अरे, तुम लोग कौन है? हम गोली मार देगा। देखते नहीं, हम कम्पनी बहादुर का सिपाही है! चलो हमको सलूट मारो...सावधान! सलूट। (हँसना) सलूट मारना नहीं आता? ऐसे...ऐसे ऐसे! (करके दिखाना) कहाँ जाता? किधर से आता?

गंगा : आप बहुत अच्छे लगते हैं।

सिपाही : यह कौन है?

गंगा : शंकरपुर के राना बाबा के पौत्र...राजकुमार।

सिपाही : राना बेनीमाधव के पुत्र?

गंगा : हाँ-हाँ, वही।

(सिपाही का फौजी सलाम करना।)

सिपाही : सावधान! हमको बता दिया, मगर और किसी को मत बताना। इस टाइम सच बोलना खतरनाक है। शंकरपुर का नाम अंग्रेज बहादुर ने कागज में लिख लिया है। मेरा नाम दयाशंकर अवस्थी है। हमारे बाप-दादा ने राना बाबा का नमक खाया है। हाँ, कम्पनी बहादुर का सिपाही कभी नहीं भूलता, कभी नहीं सोता। कभी नहीं बैठता। हर वक्त मार्च करता रहता है।

(चलना)

कुमार : आप कहाँ जा रहे हो?

सिपाही : वह जो गाँव देख रहे हो न, वहाँ मेरी ननिहाल है। मेरे मामा हीरालाल अवस्थी, अवध के पहले कम्पनी सिपाही थे, जो सिपाही से जमादार, जमादार से रिसालदार हुए। उन्हीं की वजह से मैं कम्पनी फौज में सिपाही बना—ननिहाल की धूल माथे लगाने जा रहा हूँ। सावधान! मार्च।

(चलना)

सिपाही : सन् अठारह सौ चौदह का गोरखा युद्ध, फिर पिंडारी की लड़ाई, मराठा युद्ध, अंग्रेज का गुस्सा, कम्पनी की दुनाली बंदूक, विलायती

कारतूस, साहब बहादुर का खानसामा, मेमिन की चाल, चपरासी का 'सलाम हुजूर'। साहब की जुबान। हुकुम। आडर। बहादुर। अंग्रेज का दिमाग। अपने मुल्क इंग्लैंड का नाम। क्या समझे ?

गंगा : माई-बाप ! मैं कम्पनी बहादुर का सिपाही बनूँगा।

सिपाही : अच्छा ?

गंगा : यस सर।

सिपाही : तुम अंग्रेजी जानता ?

गंगा : यस सर।

(सिपाही का हँस पड़ना)

सिपाही : और तुम राजकुमार ? राना बेनीमाधव का सुपुत्र। हमारी यह भेंट-मुलाकात किसी को न बताना।

गंगा : मेरा नाम गंगादीन। मेरे पिताजी, पंडित दुलीराम अग्निहोत्री, शंकरपुर पाठशाला के गुरुजी।

सिपाही : गंगादीन ! यह बात किसी से न बताना। दिल की बात किसी से न कहना, यह बात हमने अंग्रेज बहादुर से सीखा। हमारा इंतजार करना। कर्नल स्लीमैन की लश्कर इधर से जब लौटेगी, मैं खुद तुम्हें अपने साथ ले लूंगा और कम्पनी फौज में भरती करा दूंगा। अच्छा सलूट। 'कुइक मार्च', तेज चल।

(वही मार्च, गाना गाता हुआ सिपाही का जाना)

हाँ हाँ हो रामा
कभी दुख कभी सुख

अंग्रेज का सिपाही
अंग्रेज की नौकरी
कभी सुख कभी दुख
कभी दुख कभी सुख...।

(दोनों का देखते रह जाना।)

कुमार : राना बाबा ने सच कहा था—जाओ, देख आवो अंग्रेज लश्कर। कम्पनी का सिपाही क्या है, अंदाज हो जायेगा, देखना कम्पनी क्या है ? अंग्रेजों की चाल क्या है ? हमारा देश और समाज क्या है ? नवाबी राज में अन्याय और गरीबी क्या है ? (सहसा) यह कौन आ रहा है ? यह वही है, लश्कर के सामने यहाँ का दुःख रो रहा था।

(एक व्यक्ति का प्रवेश)

कुमार : कौन हो तुम ?

खेवट : खेवट हूँ, खेवट। (गा पड़ना) गहरिया नदिया अगम जल, जोर बहुत है धार, खेवट से पहले मिलो, जो उतरा चाहो पार।

कुमार : कहाँ रहते हो ?

खेवट : जहाँ रुक जाता हूँ।

गंगा : अंग्रेज लश्कर के सामने क्या बकवास करते हो ?

खेवट : दोहाई धर्मावतार की।

कुमार : अंग्रेज से अपना दुखड़ा क्यों रोते हो ?

खेवट : इसीलिए कि अंग्रेज कंपनी बहादुर है। देखा नहीं, नौआब के सिपाही किस तरह गाँव को लूटते हैं ! एक गाँव से दूसरे गाँव। बिना छत और छप्पर के घरों को लूटते हैं और सब कुछ खा-पी, लूट-खसोट फूंक-तापकर रातों-रात चले जाते हैं।

सारे तालुकेदार, सीरदार, चकलेदार के सिपाही, उन्हीं के सिपाही और वे ही लुटेरे। इसीलिए कहीं कोई सुनवाई नही। दोहाई हो अंग्रेज बहादुर की, दोहाई हो कंपनी सरकार की, यह हमारी विपत्ति तो सुनने आई। (रुककर) तुम राना बाबा के पोते हो न ?

कुमार : हाँ, क्यों ?

(खेवट का हँसना)

गंगा : बन्द कर हँसी। बड़ा कथा-वाचक बनता है ! मैंने बहुत सुन ली तेरी बकवास।

कुमार : नहीं, इसे डाँटो नहीं।

खेवट : आप लोग अभी बच्चे हैं। आपकी डाँट का बुरा क्या मानना। मगर एक बात बता देता हूँ। कर्नल स्लीमैन ने जो कुछ देखा और मुझे दिखाया, उसे राजकुमार बाबू, तुम जरूर देखना।

कुमार : क्या देखा ?

खेवट : आधी रात। महादेवा गाँव। जाड़े की घनी काली रात, कुहासे में लिपटी हुई। मुझे और कंपनी के सिपाहियों को लिए हुए कर्नल स्लीमैन गाँव के बाग में छिपा हुआ था। गाँव के चारों ओर कितने चोर, डाकू सियार की बोली बोल रहे हैं, गाँव के सारे कुत्ते बेतरह भूँक रहे हैं, गाँव के तीन घरों में एक साथ आग लग गई। पूरे गाँव में गोहार मच गई। लोग भागने-रोने लगे। कुदार, गंडासा, तीर-धनुख, भाला, गुलेल और फरसा से लैस नौआब की फौज से भागे हुए सिपाही गाँव के एक-एक घर-परिवार को लूटने

लगे। (खेवट का चिल्ला पड़ना) पकड़ लो, घेर लो, इन लुटेरों को। देखते क्या हो ? पकड़ लो इन हत्यारों को (खेवट राजकुमार को देखता रह जाता है।)

कुमार : क्या देख रहे हो ?

खेवट : कभी अपने पिता राना बेनीमाधव को देखा है ? जाओ लखनऊ में उन्हें देख आओ। सुना है वह अंग्रेजों के खिलाफ अवध में लड़ाई लड़ने की सोचते हैं ? और गुलामी करते हैं वाजिदअली शाह की।

कुमार : मैं अपने पिता के खिलाफ कुछ नहीं सुन सकता।

खेवट : अपने पिता को कभी देखा है ?

(खेवट का वही गाते हुए चले जाना।)

गंगा : मैं कंपनी बहादुर की सेना में भर्ती होने जा रहा हूँ।

कुमार : तुम अंग्रेज की नौकरी करोगे ?

गंगा : गुलामी से नौकरी कहीं अच्छी। और सिपाही की नौकरी, वह भी कंपनी बहादुर की, वाह !

कभी दुख कभी सुख।
अंग्रेज का सिपाही॥

□

दूसरा दृश्य

स्थान : लखनऊ, नवाब के महल का बरामदा।

समय : रात का दूसरा पहर।

(राना बेनीमाधव बैठे कुछ सोच रहे हैं। पृष्ठभूमि से नौबत बजने की आवाज उभरती है। पृष्ठभूमि से उन्हें सुनाई पड़ता है—'लोगो, खुश हो कि दुनिया फानी है—कूच नगाड़ा सांस का बाजत है दिन-रैन।')

बेनीमाधव : कौन है ?

(राजकुमार का प्रवेश। पिता का चरण-स्पर्श करता है।)

बेनीमाधव : राजकुमार तुम ? अचानक कैसे आना हुआ ?

कुमार : काकोजी, कितने दिन हो गए आपको नहीं देखा।

बेनीमाधव : बेटे, आज तुम मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो ?

कुमार : क्योंकि ऐसा पहले कभी नहीं देखा था।

बेनीमाधव : क्या ?

कुमार : मैंने कर्नल स्लीमैन की लश्कर को पूरे अवध में घूमते हुए देखा है।

बेनीमाधव : यह कैसे मुमकिन हुआ ? किसने तुम्हें यहाँ अकेले आने दिया ?

कुमार : काकोजी, महल की इस फ़िजा में यह किसकी आवाज सुनाई दे रही है ? ऐसा लगता है, जैसे असंख्य दुखी आत्माओं के अदृश्य में गुजरने की सनसनाहट हो रही है।

बेनीमाधव : तुम, इस तरह अकेले यहां आए कैसे ?

कुमार : आपका नाम लेकर।

बेनीमाधव : तुम्हें किसी ने रोका नहीं ?

कुमार : नहीं। यहाँ आते हुए, हौज के किनारे एक कुत्ते को देखा, जो अपनी दुम टाँगों में समेटे सो रहा था। उसे देखकर मैंने अपने-आपसे पूछा—क्या मेरे काकोजो ने कभी किसी कुत्ते को इस तरह सोते देखा है ? क्या मेरे काकोजी ने कभी सोचा है कि यह कुत्ता कोई दुखी आत्मा है ?

बेनीमाधव : बेटे, तुम क्या कह रहो हो ?

कुमार : शंकरपुर से यहाँ के लिए चलते समय राना बाबा *ने मुझसे कहा था कि यहाँ कुछ नहीं रहेगा,* सिर्फ ईश्वर रहेगा ! वही, जो किसी समय भी अपनी उँगली उठाकर कह सकता है कि बस, अब खेल खत्म।

बेनीमाधव : बेटे, लगता है तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। चलो, महल में आराम करो।

कुमार : मैं आपको यहाँ से ले जाने के लिए आया हूँ।

बेनीमाधव : बात क्या है ? जब तुम यहाँ आये ही हो तो कम से कम यहाँ की खूबसूरत चीजें तो देख लो। यहाँ के नृत्य-संगीत, रास, गान...।

कुमार : मुझे अब और कुछ नहीं देखना।

बेनीमाधव : तुम्हारा वह साथी, गंगादीन, कहाँ है ?

कुमार : गंगादीन कंपनी की फौज में सिपाही हो गया। काकोजी, क्या मैं इसी समय आपके नवाब वाजिदअली शाह से मिल सकता हूँ ?

बेनीमाधव : तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो ?

कुमार : लखनऊ में तीन दिनों से रह रहा हूँ। यहाँ जो कुछ देखा-सुना, उससे लगा यह सब किसी प्राचीन शोक-गीत का अंतिम पद है।

बेनीमाधव : तुम्हें क्या हो गया है ?

कुमार : मैंने देखा है अंग्रेज बहादुर है, जबर्दस्त और होशियार। और आप, आपका नवाब ठीक अंग्रेज बहादुर का उल्टा। बहादुर, जबर्दस्त और होशियार होना बड़ी बात है। नहीं, नहीं, केवल बहादुर, जबर्दस्त और होशियार होना कोई बड़ी बात नहीं। बड़ी बात है, समय को ठीक वक्त से पकड़कर उसी पर सवार हो जाना राना बाबा ने मुझे बताया है कि सिखों और मराठों की हार क्यों हुई ? वे तो जबर्दस्त, बहादुर और होशियार माने जाते हैं। दिल्ली में मुगल शहंशाही और बंगाल में नवाब नाजिम-शाही का पतन क्यों हुआ ? हालाँकि उनमें लखनऊ के नवाब जैसा बचकानापन भी नहीं था।

बेनीमाधव : चुप रहो। अगर कोई सुन लेगा तो क्या होगा ?

(वही स्वर गूंजता है पृष्ठभूमि में।)

'लोगो, खुश हो कि दुनिया फानी है। कूच नगाड़ा साँस का...'

□

तीसरा दृश्य

स्थान : शंकरपुर में राना बाबा का घर।
समय : प्रातःकाल।

(राना बाबा घायल शेर की तरह बरामदे में घूम रहे हैं। राजकुमार चुपचाप खड़ा है।)

बाबा : मुझे पता था लखनऊ में अपने काकोजी से मिलकर तुम्हें कैसा लगेगा।

कुमार : बाबा, आपने कभी काकोजी को कुछ नहीं बताया ?

बाबा : अगर कोई जानना ही न चाहे तो कोई उसे कुछ बता सकता है ?

कुमार : काकोजी आपसे दूर क्यों रहते हैं ?

बाबा : वह अपने-आप से दूर रहता है।

कुमार : आप नवाबों को पहले से ही इतना जानते थे ?

बाबा : हाँ, जितना संभव था।

कुमार : अंग्रेजों को कब से जानते हैं ?

बाबा : अंग्रेजों के बारे में पढ़ा है, उनके इतिहास को, उनके समाज और चरित्र को।

कुमार : बाबा, अब क्या होगा ?

बाबा : जो तुम करोगे।

कुमार : मैं क्या कर सकता हूँ ?

बाबा : करने से पहले तुम्हारे लिए वह जानना जरूरी है।

कुमार : क्या ?

बाबा : यह समय।

कुमार : समय ?

बाबा : हाँ, समय। जिसमें इधर हिन्दुस्तानियों की गफलत और जहालत का पैमाना छलकने को नहीं बल्कि हाथ से गिरकर टूट जाने को है, और उधर अंग्रेज का चरित्र, आत्मविश्वास, संगठन शक्ति, उनकी एकता...दृढ़ संकल्प।

कुमार : बाबा !

बाबा : हाँ, चरित्र और आत्मविश्वास, यही सबसे बड़ी चीज है। हिन्दुस्तान के लोगो, तुम सब मकड़ी के एक अदृश्य जाल में फँस चुके हो। किसने कहा अमजदअली शाह को, तू अपने पूत वाजिदअली शाह को ही अवध का नवाब बना ? जिसकी प्रवृत्ति विलासिता और राग-रंग की ओर थी ! उसे हुकूमत करने से अलग रखना चाहिए था। और मैं क्या कम अभागा हूँ ? मेरा इकलौता बेटा, बेनीमाधव बहादुर, नेक, सच्चरित्र, उसी नवाब की स्वामिभक्ति में डूबा है। (रुककर) सुनो राजकुमार, वह समय बहुत पास है जब उन मर मिटने वालों में हम सब होंगे। मैंने अपनी जवानी में ही अंग्रेजों की वह आवाज सुन ली है—"मैं ऐसी आग तुम्हारे मुल्क में लगाऊँगा, जिसे गंगा-सरजू का सारा पानी

भी न बुझा सकेगा। ऐसी आग लगाऊँगा...।"

कुमार : बाबा, तब से आपने क्या किया ?

बाबा : तब से केवल देख रहा हूँ और कुछ नहीं कर सका।

कुमार : क्यों ?

बाबा : इसका जवाब मेरे पास नहीं है।

कुमार : क्यों ?

बाबा : इसका उत्तर तुम्हें देना होगा।

(कुमार अपलक बाबा को देखता रह जाता है।)

बाबा : एक दिन ऐसा जरूर आएगा कि कोई इस धरती पर आएगा। गरीब फकीर की तरह इस जमीन पर चलेगा। उसके नंगे पाँवों के स्पर्श से जमीन हिलेगी और उस कंपन से अंग्रेजों की जड़ें हिल जाएँगी।

कुमार : ऐसा होगा ?

बाबा : अवश्य होगा।

कुमार : पर यह तो भविष्य की बात है। आज क्या होगा ?

बाबा : इसी वर्तमान में भूत और भविष्य दोनों हैं ?

कुमार : बाबा, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।

बाबा : अभी तुमने देखा ही क्या है ! जिन्दगी के नाम पर इस घर का सुरक्षित जीवन, ज्ञान के नाम पर दूलीराम की पाठशाला, अनुभव के नाम पर शंकरपुर गाँव की सीमाएँ। इन सीमाओं के परे और क्या है, उसकी कभी कोई जिज्ञासा हुई ?

कुमार : मुझे कभी जानने क्यों नहीं दिया गया, इस गाँव

के बाहर भी कोई चीज है—कोई समाज, कोई देश, कोई जीवन...?

बाबा : तुममें कभी कोई जिज्ञासा हुई ?

कुमार : क्यों नहीं हुई ?

बाबा : जवाब दो ।

□

चौथा दृश्य

स्थान : शंकरपुर में वही घर, वही स्थान ।
समय : सायंकाल ।

(दृश्य में राना बाबा बैठे रामचरितमानस पढ़ रहे हैं । पाठशाला के गुरु दुलीराम का प्रवेश ।)

दुलीराम : जय हो, कल्याण हो राना बाबा की ।

बाबा : आइए, आइए, पंडितजी । आपको बधाई देने के लिए बुलाया है ।

दुलीराम : कैसी बधाई रानाजी ?

बाबा : आपने अपने शिष्य राजकुमार का चित्त इतना निर्मल और जिज्ञासु कर दिया है कि अब उसे यथार्थ जीवन-जगत् की पाठशाला चाहिए । दूसरी बधाई इसलिए कि आपका बेटा गंगादीन कंपनी का सिपाही बन गया । यह भी एक सौभाग्य की बात है ।

दुलीराम : अरे महाराज, ब्राह्मण पुत्र फिरंगी की नौकरी करे, यह कैसा सौभाग्य ?

बाबा : सुनो महाराज, प्लासी की लड़ाई के बाद यहाँ की लक्ष्मी ने हिन्दुस्तानियों से रूठकर अंग्रेजों का घर देख लिया है । ये अंग्रेज लोग, इंग्लैण्ड के

मामूली व्यापारी, गुंडई-बदमाशी करने वाले लौंडे, हिन्दुस्तान में आकर इन्होंने देखा कि यहाँ सब कुछ है मगर कोई इस मुल्क का मालिक नहीं है। उन्हें लगा कि वे ही मालिक बनने के लिए ईसा मसीह की तरफ से यहाँ भेजे गए हैं। ढाका, मुर्शिदाबाद, हुगली, पटना, बनारस, लखनऊ, ग्वालियर और दिल्ली दरबार में राय देने के लिए और शासन का गुरुमंत्र देने के लिए, आए यह अंग्रेज। इन अंग्रेजों में व्यवस्था है, अपने देश के लिए प्यार है, उनका अपना 'गॉड' है, अपनी निशानी है, पहचान है, अपना झण्डा है। तभी यहाँ की लक्ष्मी अंग्रेजों पर फिदा हो गई। बोलिए गुरुजी, हमारे पास क्या है ?

(इस बीच राजकुमार आकर बाबा के पीछे चुपचाप खड़ा हो गया है।)

बाबा : अंग्रेज वही देख रहा है जो है। हमने देखना छोड़ दिया है। कर्नल स्लीमैन के साथ आपके आशीर्वाद से, राजकुमार वही देख रहा है।

दुलीराम : क्या वह आपके साथ नहीं देख सकता था ?

बाबा : क्या मैं विश्वास करने लायक रह गया हूँ ? क्या मेरी बात सच रह गई है ? क्या मैं अपने-आप में एक झूठ बनकर नहीं रह गया हूँ ? (रुककर) मेरा अपना ही बेटा राना बेनीमाधव कभी मेरी बात नहीं सुनता। आपने कभी यहाँ देखा है महाराज, पिता और पुत्र में, राजा और प्रजा में कोई बातचीत होते हुए ?

दुलीराम : अंग्रेज साहब यहाँ क्या देखने आया है राना बाबा ?

बाबा : वह घूम-घूमकर देख रहा है कि क्या है अवध, जिसे हिन्दुस्तान का 'चमन गुलिस्ताँ', 'गार्डेन आफ इंडिया', 'फिरदौसे-हिन्द' कहा जाता है। कहाँ है वह हिन्दू, वह राजा, सत्य, न्याय, सदा-व्रत वाला, जिसकी कहानियाँ उसने सुन रखी हैं। कहाँ हैं वे मुसलमान बादशाह, नवाब जो मुसल्ला ईमान की बात करते थे ? वह देख रहा है कि यहाँ हिन्दू-मुसलमान का फर्क कोई नहीं जानता, क्योंकि गढ़ी का ठाकुर और महल का नवाब दोनों अवध की जागीरदारी के मजबूत रिश्ते में एक-दूसरे से बँधे हुए हैं। स्लीमैन साहब यह देखकर ताज्जुब करता है कि हिन्दू ताजियादारी करते हैं और मुसलमान दीवाली मनाते हैं। सारे अवध में तमाम हिन्दू राजाओं ने मस्जिदें और इमामबाड़े बना रखे हैं। मगर याद रखो महाराज, कर्नल स्लीमैन अपनी डायरी में लिखेगा, जरूर लिखेगा कि यहाँ के हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे के खून के प्यासे हैं। ऐसे हालात में कम्पनी बहादुर को चाहिए कि वह इन जंगली जातियों को अपनी जहालत और एक-दूसरे के प्रति इतनी खौफ़नाक नफरत से छुटकारा दिलाने के लिए जल्द से जल्द नवाबी खत्म करे और अवध को अपने कब्जे में ले ले। इंग्लैण्ड की सरकार, जल्दी से जल्दी, बड़ी तादाद में बंदूकें भेजे।

दुलीराम : ऐसा है राना बाबा ?

बाबा : देखा नहीं, हिन्दू-मुसलमानों के बीच नफरत पैदा करने के लिए अंग्रेज क्या-क्या कर रहे हैं ! और दूसरी ओर लखनऊ के नवाब को, मेरे बेटे माधव को, यहाँ के राजा, तालुकेदारों को यह नहीं मालूम कि अंग्रेजों के बंदूकों, कारतूसों से लदे हुए जहाज, बड़ी-बड़ी नावें, गंगा, सरजू और गोमती में आ चुकी हैं।

दुलीराम : बस ! बस !! राना बाबा, बस । अब और नहीं सुना जाता ।

(दुलीराम जाने लगते हैं । राना बाबा उनका हाथ थामकर)

बाबा : सुनो महाराज, ऐसी ही रातों में सत्यपीर, सत्यनारायण माथे पर चंदन का टीका लगाए, हाथ में बाँसुरी लिए, गेरुआ वस्त्र पहने, कमर की जंजीरें झनकाते हुए दिखाई दे जाते हैं।

दुलीराम : ये सत्यपीर सत्य नारायण कौन हैं ?

बाबा : सूफी देवता, जो मुसलमानों के लिए सत्यपीर के नाम से और हिंदुओं के लिए सत्यनारायण के नाम से जाने जाते हैं ।

(तभी पृष्ठभूमि से एक झनझनाहट सुनाई पड़ती है। दुआशाह—एक सूफी फकीर—सामने आता है ।)

दुआशाह : जय हो सत्यपीर सत्यनारायण !

बाबा : देखो, यही है वह, जिसने झोली में चावल-दाल डालते ही राजकुमार को दुआ दी थी कि इसका ब्याह एक ऐसी बेटी से होगा जो पद्मिनी है, जो भाग्यवती है। इसीने सूरजसिंह की बेटी

हंसगौरी का पता दिया था ।

दुआशाह : अरे राजकुमार, तुम वहाँ चुपचाप क्यों खड़े हो ? बाबा तो तुम्हारी शादी की तैयारियाँ शुरू करने जा रहे हैं।

बाबा : सुनो बेटे, अब सब कुछ तुम्हें बता देने का समय आ गया है । एक रियासत थी खजूरगाँव की । सूरजसिंह वहाँ के रियासतदार थे। इसी फकीर ने बताया—सूरजसिंह की एकमात्र संतान पैदा हुई है, उनकी बेटी हंसगौरी । विवाह के अपमान से बचने के लिए सूरजसिंह उसे मार डालना चाहते थे । मैं भागा हुआ वहाँ गया और उनसे कहा—मैं अपने पौत्र राजकुमार का विवाह आपकी बेटी से करने की प्रार्थना लेकर आया हूँ । सुनते ही सूरजसिंह रो पड़े और मेरे चरणों में अपना सिर रखकर बोले, 'यह मेरा अहोभाग्य है ।' बेटे, अब उसी विवाह का समय आ गया है ।

कुमार : जो आज्ञा ।

(बाबा के चरणों का स्पर्श करना ।)

बाबा : अगले वर्ष आज के ही दिन तुम्हारा विवाह संपन्न होगा ।

दुलीराम : जै हो !

(दुआशाह का गा पड़ना ।)

सून लागै दिया बिनु मन्दिर,
माँग सेंधूर बिनु हो ।
ललना ओइसन सून तिरिया गोद
एक बालक बिनु हो ।।

ललना जब किरपा भइले राम,
गोदिया बालक खेले हो।
ललना पूत मोरे होवैं देस सेवक
राम से विनती करो हो॥

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान : शंकरपुर, पंचपुरी।
समय : दोपहर।

(पंचपुरी में पंचायत बैठी हुई है। लोगपरस्पर, कर्नल स्लीमैन, लार्ड डलहौजी, राना बाबा, बेनीमाधव और वाजिदअली शाह के बारे में बातें कर रहे हैं।)

एक पंच : जब से अंग्रेज साहब ने यह ऐलान कर दिया कि अवध की सल्तनत कम्पनी राज में मिला ली गई, तभी से आग लग गई है।

दूसरा : खेवट बता रहा था कि लार्ड डलहौजी के आर्डर से स्लीमैन साहब के बाद लखनऊ का रिजडेन्ट उटरम बनाया गया। सो, भैया, एक दिन ऐसा हुआ कि उटरम, साही महल में वाजिदअली शाह से मिलने गया। उटरम ने नौआब को एक कागज पेस किया, जिसमें लिखा था, कि मैं खुशी से अपनी सल्तनत कम्पनी को देने के लिए राजी हूँ। नौआब ने कागज पर दसखत

करने से साफ इन्कार कर दिया। तीन दिन गुजर गए। इस पर अंग्रेज बिगड़ गए। साही महल में दनादन घुस गए। महल को लूटा। बेगमों की बेइज्जती की और वाजिदअली शाह को यह कहकर कलकत्ते भेज दिया कि चलो वहीं से अपने हक के लिए इंग्लैण्ड से लिखा-पढ़ी करो।

तीसरा : इतना बड़ा राज, राजमहल, सेना, फउज, बेगमात, धन-दौलत सब छोड़ि के आखिर गए कइसे नवाब वाजिदअली शाह ?

पहला : बस, यही जानो कि अंग्रेजों ने बिना लड़ाई-झगड़े के अवध पर कब्जा कर लिया।

दूसरा : अरे वही सलीमन साहब, जो हर बात में नौआब की गलती निकालने आया था, वह जासूसी-मुखबिरी करने आया था। भेद लेने आया था, यहाँ के तालुकेदार और राजाओं का।

तीसरा : उसने यह क्यों नहीं बताया कि कम्पनी की फौजदारी अदालतें नरक से भी बदतर हैं ! गोरे साहब दिन-दहाड़े झूठे दावे करके लोगों की जमीन-जायदाद हड़पते हैं। अरे वे तो डाके डलवाते हैं और हिन्दू-मुस्लिम दंगे भी करवाते हैं।

चौथा पंच : तब से राना बेनीमाधव न जाने कहाँ-कहाँ घूम रहे हैं !

दूसरा : सुना है अंग्रेजों से लड़ने की तैयारी कर रहे हैं।

पहला : हमने तो यहाँ तक सुना है कि अपना गंगादीन, कम्पनी की फौज से फरार होकर, कमल और

रोटी लेकर एक छावनी से दूसरी छावनी में घूम रहा है।

(सहसा पृष्ठभूमि में से ब्याह की शहनाई का संगीत सुनाई देने लगता है।)

पहला : राना बाबा माने नहीं। राजकुमार और हंस-गौरी की शादी रचवा रहे हैं।

दूसरा : पर यह मुमकिन कैसे होगा ? एक ओर शादी और दूसरी ओर राना बेनीमाधव का अंग्रेजों से लड़ाई की तैयारी ?

तीसरा : ब्याह की तिथि है, आषाढ़ सुदी पंचमी।

पहला : चलो यह भी अच्छा है। अंग्रेजों के गुलाम होने से पहले राना बाबा के पोते का ब्याह हो जाएगा।

दूसरा : (डाँटकर) क्यों ऐसी अशुभ बात मुँह से निकालते हो ? यह जरूरी तो नहीं कि राना बेनीमाधव अंग्रेजों से हार जाएँ !

(हाथ में नंगी तलवार लिए राना बेनीमाधव का प्रवेश। लोग खड़े होकर उनका अभिवादन करते हैं।)

पहला पंच : दुहाई राजा की।

दूसरा : क्या है रानाजी ?

राना : हमने अंग्रेजों से लड़ाई लड़ने का फैसला किया है। तुम सबको लड़ाई के लिए तैयार हो जाना है।

चौथा : इसी बीच राजकुमार की शादी भी होगी ? यह कैसे मुमकिन है ?

राना : क्या बताऊँ ? यह सब राना बाबा की जिद है।

तीसरा : अंग्रेज बड़े चतुर हैं। आपके पीछे उनके गुप्त-चर लगे हैं। उन्हें इतना तो पता होगा ही कि आप बेटे की शादी में आएंगे। कहीं ऐसा न हो, ब्याह के समय ही वह आक्रमण कर दें।

राना : इस ब्याह को टालने की मैं भरसक कोशिश करूँगा।

(इस बीच राना बाबा वहाँ आ चुके हैं।)

बाबा : यह क्या कह रहे हो? किससे कह रहे हो?

राना : पन्द्रह दिन के भीतर लखनऊ के राज सिंहासन पर फिर अपने बादशाह वाजिदअली शाह बैठेंगे। जय हो मातु दुर्गा भवानी की!

बाबा : वाजिदअली शाह अंग्रेजों के कलकत्ता, मटिया-बुर्ज में नज़रबन्द हैं। वह अब लखनऊ नहीं लाए जा सकते।

राना : अगर उन्हें नहीं लाया जा सकता तो उनके शहजादा बिरजिस कदर सिंहासन पर होंगे।

बाबा : शहजादा अभी नाबालिग है। जाओ राना, अपने बेटे के ब्याह की तैयारी करो।

राना : काकोजो, आपसे हाथ जोड़कर कहता हूँ, यह विवाह अभी रोक दें। हमें अभी अंग्रेजों से अपनी आजादी के लिए लड़ना है।

बाबा : समय नहीं है अभी अंग्रेजों से लड़ाई करने का।

राना : क्यों? समय क्यों नहीं है? सारे राजा-तालुकेदार, बेगम हजरत महल, मौलवी अहमदशाह, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, सतारा के रंगोबापू, रुहेलखण्ड के खानबहादुर खाँ, गोंडा के राजा

देवीबख्श, कानपुर के तात्या टोपे, बिठूर के नाना साहब...।

बाबा : सिर्फ इन बड़े-बड़े नामों से कुछ नहीं हो सकता। लोगों को अभी पता नहीं है कि आजादी होती क्या है। आजादी कुर्बानी से हासिल होती है। जब यही नहीं मालूम कि आजादी है क्या, तो लोग उसके लिए कुर्बानी कैसे दे सकते हैं?

राना : हमने लड़ाई की तैयारी कर ली है। अंग्रेजों की छावनी में हिन्दुस्तानी सिपाही विद्रोह कर चुके हैं। लोगों में कमल और रोटी बाँटी जा रही है।

बाबा : तुम्हारी यह तैयारी सिर्फ चन्द दिनों की है, और अंग्रेजों को तैयारी उस दिन से है जब उन्होंने बंगाल की जमीन पर कदम रखा। अंग्रेज तैयार हैं, तुम अभी तैयारी कर रहे हो—इसे याद रखो। रही नवाब जानेआलम वाजिदअली शाह की बात, अंग्रेजों ने उसे फँसा रखने के लिए मटियाबुर्ज में ही उसके लिए एक छोटा-सा लखनऊ कायम कर दिया है। तुम अंग्रेजों को नहीं जानते, अंग्रेज तुम सबको अच्छी तरह से जानता है—यही उसकी ताकत है।

(सहसा फौजी वर्दी में गंगादीन का प्रवेश। उसके एक हाथमें रोटी है, दूसरे में कमल)

पहला पंच : गंगादीन तुम! यह तुम्हारे हाथ में क्या है?

गंगा : कमल माने आजादी की लड़ाई और रोटी के माने हम सब एक अन्न खाने वाले, हम एक

हैं। (रुककर) राना जी, नाना साहब, अजीमुल्ला खाँ और मौलवी अहमदशाह तीर्थ-यात्रा के रूप में चारों तरफ घूम रहे हैं। इतवार ३१ मई, १८५७ का दिन पूरे भारत में एक साथ अंग्रेजों के खिलाफ आजादी के लिए युद्ध छेड़ देंगे। भारत माता की जय।

(तेजी से प्रस्थान)

बाबा : जिसे यह नहीं मालूम, पूरा भारत क्या है, वह एक होकर लड़ने की बात करता है। (रुककर) अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई एक ऐसी लड़ाई है जिसे पूरे भारत की शक्ति चाहिए केवल अवध और मराठों की नहीं।

राना : काकोजी।

बाबा : मैं यह विवाह नहीं रोकूँगा। मुझे अपने वंश की चिन्ता है।

राना : हमें अपने सिंहासन की चिन्ता है।

बाबा : (हँसते हैं) सिंहासन! किसका सिंहासन? राना बेनीमाधव के लिए बेगम हजरत महल, बेगम हजरत महल के लिए नाना साहब पेशवा और सारे देसी सिपाहियों के लिए अब भी दिल्ली का कठपुतला बादशाह बहादुरशाह जफर! जो हिन्दू और मुसलमान में बँटा हुआ है, जो अवध और महाराष्ट्र में बँटा है, जो कर्म से पहले ही फल पर आँख गड़ाए हुए, जो एक भारत देश नहीं, बल्कि दिल्ली, लखनऊ, झाँसी, कानपुर, ग्वालियर, सतारा आदि न जाने कितने केन्द्रों की सीमाओं में बँधा है। इतनी बिखरी हुई

ताकत अंग्रेजों की एक समूची ताकत से कैसे लड़ाई लड़ेगी, मेरी समझ में नहीं आता। यह वह लड़ाई नहीं है, जो एक राजा, एक तालुकेदार और दूसरे राजा और तालुकेदार के बीच होती है। यह पहली बार एक दूसरी तरह की लड़ाई है। बिलकुल नई तरह का जंग। नए हथियार और पुराने हथियारों के बीच।

□

दूसरा दृश्य

स्थान : शंकरपुर में हंसगौरी के घर
सामने का बरामदा ।
समय : प्रातः काल ।

(हंसगौरी जमीन पर चावल की लाई बिखेर रही है। उसकी सहेली सोनपत्ती आती है ।)

सोनपत्ती : सखी, यह क्या कर रही हो ?

हंसगौरी : कहाँ-कहाँ से पंछी आएँगे, इसे खाएँगे ।

(हंसगौरी गा पड़ती है)

चंपक हरवा अंग मिलि अधिक सुहाय ।
जानि परै सिय हियरे जब कुम्हिलाय ।
डहुक न है उजियरिया निसि नहिं धाम ।
जगत जरस अस लागै मोहिं बिनु राम ।

सोनपत्ती : सखी, एक खबर ले आई हूँ । विवाह रुक गया ।

हंसगौरी : बक !

सोनपत्ती : हाँ राना बाबा और राजा बेनीमाधवजी
बहुत कहा-सुनी हो गई । राजा साहब ने क
दिया कि राजकुमार और हंसगौरी का विवा
अभी नहीं, अगली लगन में होगा । मतलब अ
लड़ाई शुरू होने जा रही है ।

हंसगौरी : (लाई बिखेरती हुई) ले, आ जा । आ जा । ओ देख, गिलहरो आकर पूँछ के ऊपर कैसे खड़ी हो गई है । आगे के दोनों पाँवों से रोटी को उठाकर कैसे कुटर-कुटर करके खा रही है ।

सोनपत्ती : अरे सखी, विवाह रुक गया ।

हंसगौरी : बक ।

सोनपत्ती : अरे बक्क का मतलब मैं क्या जानूँ ?

हंसगौरी : चल, गाते हैं । चल शुरू कर ।

सोनपत्ती : मुझे तो रोना आ रहा है कि मेरी सखी की शादी रुक गयी ।

हंसगौरी : अच्छा चल, मैं शुरू करती हूँ ।

(गाने की तैयारी करती है)

सोनपत्ती : अरे, राना बाबा आ रहे हैं ।

(राना बाबा का प्रवेश)

बाबा : सौभाग्यवती...। सुनो बेटी, तुम्हारे विवाह को कोई टाल नहीं सकता । उसी निश्चित तिथि और मुहूर्त पर तुम्हारा विवाह कुमार के साथ सम्पन्न होगा ।

हंसगौरी : सब आपका आशीर्वाद है । आप जो चाहेंगे, वही होगा ।

बाबा : जो तुम चाहोगी वही होगा ।...बेटी, यह संसार महज हिसाब-किताब-तर्क से समझने की चीज नहीं है । मेरी बेटी हंसगौरी और मेरा पौत्र कुमार तर्क के फेरे से पार खड़े हैं । (सहसा) कौन ? कौन खड़ा है उधर ?...सूरजसिंह ।

हंसगौरी : हाँ, मेरे काकाजी ।...काका !

(सूरजसिंह आकर बाबा के चरण स्पर्श करते हैं ।)

बाबा : क्यों, इतने उदास क्यों हो सूरजसिंह ? बोलो। डरो नहीं। बात क्या है ?

सूरज : मेरी बेटी का विवाह अभी रोक दीजिए, हाथ जोड़ता हूँ।

बाबा : क्यों ? बोलो, क्यों ?

सूरज : बहुत डर लग रहा है।

बाबा : बेटी, तुम जाओ यहाँ से।

(हंसगौरी का सोनपत्ती के साथ जाना।)

बाबा : वह दृश्य याद है, जब हंसगौरी के जन्म पर, तुम्हारे महल में थालियाँ बजने लगी थीं और तुम्हारा हुक्म हुआ था कि कन्या को महल के आँगन में जमीन खोदकर दबा दो। याद है मेरी बात—'मत मारो कन्या। जमीन में जिंदा मत दबाओ। मैं अपने पोते राजकुमार से तुम्हारी कन्या के विवाह का वचन देता हूँ'।...वह वचन पूरा होना है।

सूरज : अंग्रेजों का आक्रमण किसी भी वक्त हो सकता है।

बाबा : अंग्रेजों का आक्रमण हो चुका है। हमें चारों ओर से उन्होंने घेर रखा है।

सूरज : तभी तो...तभी तो विवाह...विवाह, विवाह कैसे हो सकता है ?

बाबा : तभी तो यह विवाह अनिवार्य है। यह विवाह धर्म है...जिसका होना हमारा होना है।

सूरज : पर...मगर...।

बाबा : सूरजसिंह।

सूरज : मैं हंसगौरी का पिता हूँ।

बाबा : तुम...तुम ?...बेटी हंसगौरी। इधर आना।

(हंसगौरी का प्रवेश)

बाबा : सूरजसिंह, कहो वही फिर से...कहो...।

सूरज : क्या ?

बाबा : इतनी जल्दी भूल गये ? कौन हो तुम इसके ?

सूरज : मैं इसका पिता हूँ।

बाबा : इसका अर्थ मुझे समझाओ। समझाओ ! (सन्नाटा) सुनो सूरजसिंह, यह विवाह होगा। —निश्चित तिथि और मुहूर्त पर। (रुककर) मुझे अनुमान है, तुम क्या कर सकते हो—पर मुझे भय नहीं है।

सूरज : आपको मुझपर विश्वास नहीं ?

बाबा : अपने-आप से पूछो।

सूरज : मैं चाहता हूँ...।

बाबा : तुम क्या चाह सकते हो, इसका अनुमान कर सकता हूँ। जिसे अपनी बेटी के जन्म से इतना भय हो, उसके अहंकार को...बेटी, आशीर्वाद ...सब मंगलमय होगा।

(प्रस्थान)

हंसगौरी : काकोजी।

(देखते रह जाना)

(पृष्ठभूमि से यह गायन संगीत सुनाई देता है। हंसगौरी सुन रही है।)

जननी, बिनु राम अब ना अवध मा रहिबै।
राम बिना मोरी सूनी अयोध्या,
लछिमन बिनु ठकुराई
सीता बिना मोरी सुनी महलिया

अब के दियना जराई
जननी, बिनु राम हम ना अवध मा रहिबै।

गौरी : ये लोग क्यों शंकरपुर छोड़कर जा रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं?

सूरज : पता नहीं।

(वही संगीत छा जाता है।)

चंपक हरवा अंग मिलि
अधिक सुहाय...

तीसरा दृश्य

स्थान : पंचपुरी।
समय : रात का दूसरा पहर।

(राना बाबा के साथ लोग जमा हैं। खेवट लोगों को बता रहा है।)

खेवट : इस तरह कुल सोलह दिनों की लड़ाई में सारा अवध अंग्रेजी कंपनी राज के चंगुल से निकल गया। सिर्फ लखनऊ के अन्दर सारी अंग्रेजी ताकत रेजिडेंसी में कैद थी।

बाबा : बरसों के बन्द तालाब में पत्थर फेंकने से जिस तरह काई की जमी पर्तें फटती हैं और जल हिल-डुल जाता है, ठीक इसी तरह सदियों से जड़वत् भारत देश, अंग्रेजों से आघात पाकर थोड़ा तरंगित हो गया। इधर फूट का बाजार शुरू से ही गर्म था। पूरी अवध सेना का संगठन और संचालन किसी एक व्यक्ति के हाथ में नहीं था। सरकारी खजाने में रुपया नहीं था। नवाबी तिलंगे शहर लूट-पाट मचा रहे थे। २३ फरवरी, १८५८ को अंग्रेज सेनापति कैंपबेल सत्रह हजार पैदल, पाँच हजार सवार और एक सौ चौंतीस

तोपों के साथ कानपुर से लखनऊ की ओर बढ़ा। पूरब की ओर से सेनापति जंगबहादुर के अधीन विशाल गोरखा सेना, उत्तर से जेनेरल फैवस के अधीन एक सेना और दक्षिण से जेनेरल रोक्रॉफ्ट के अधीन दूसरी सेना लखनऊ की ओर बढ़ी चली आ रही थी। दो मार्च को अंग्रेजों की सेना लखनऊ के दक्षिण भाग में इकट्ठी हो गई। सेनानायक आउट्रम गोमती नदी के किनारे बढ़ता चला गया। हमारी सेना जहाँ भी पड़ाव डालती, वहीं अपनी तोपों से आउट्रम उन्हें भूनने लगता। पहाड़ी रेजिमेन्टों ने बेगम के महल पर हमला कर दिया। पाँच दिनों तक लड़ाई लखनऊ शहर की सँकरी गलियों में होती रही। नदी के किनारे के महलों और बागों पर तो पहले ही अंग्रेजों का कब्जा हो गया था। १६ मार्च को पूरा लखनऊ कैंपबेल के कब्जे में था। (रुककर) अंग्रेज जीत गए। रेजिडेन्सी आजाद हो गई।

(दौड़ता हुआ गंगादीन का प्रवेश। लोग पूछने लगते हैं, "राना बेनीमाधव कहाँ हैं ?")

गंगा : पहले तो राना बेनीमाधव ने पीछा कर रही अंग्रेजी सेना को चकमा देकर अपने सिपाहियों सहित, चुपके से लखनऊ में प्रवेश किया। शहादतगंज में विजयी सेना से मोर्चा लिया। पर वहाँ सब कुछ असंभव देखकर वह (राना) फिर लखनऊ से गायब हो गए।

बाबा : राना बेनी अब किधर है ?

गंगा : कर्नल नील, मेजर रिचर्डसन और ब्रिगेडियर रोक्रॉफ्ट, इन तीनों जंगबाजों ने चारों ओर घेरे डाले। पर कहीं राना का पता न चला। उस घेरेबन्दी में इन तीनों सिपहसालारों की भेंट बिड़हर के तालुकेदार माधोप्रसाद और गोपालपुर के रईस हुजूरसिंह से हुई। इन दोनों ने अपनी-अपनी पगड़ी अंग्रेजों के कदमों पर रखकर माफी की भीख माँगी।

बाबा : ऐसा लगता है मानो दस हजार हाथियों के बराबर बलशाली भीम, फूट और घमंड के गहरे दलदल में फँस गया है। दलदल से उबरने के लिए वह जितनी अधिक ताकत का इस्तेमाल करता है, उतना ही वह गहरा धँसता चला जाता है।...उम्दा घड़ी के बेशकीमती पुर्जे मौजूद हैं। मगर सब बिखरे हैं। उन्हें एक साथ जोड़ने और बैठाने वाले मिस्त्री नहीं हैं, हर्षवर्धन से लेकर पृथ्वीराज, राना सांगा और आज तक यही बात दिखती है।

(लोग राना बाबा की ओर देखते रह जाते हैं।)

□

चौथा दृश्य

स्थान : एक खुला स्थान ।
समय : संध्या ।

(दृश्य में राजकुमार पिता बेनीमाधव को ढूँढ़ता हुआ। एक स्थान पर वह अपने पिता को उनके साथियों के साथ देखकर खड़ा हो जाता है।)

एक सिपाही : कौन ? कौन हो तुम ?

कुमार : काकोजी ।

राना : बेटा कुमार ।

(सब एक-दूसरे को देखते रह जाते हैं ।)

कुमार : काकोजी, आप यहाँ क्या कर रहे हैं ?

(राना निरुत्तर रह जाते हैं ।)

कुमार : इतनी बड़ी सेना लेकर भी रेजिडेन्सी के मुट्ठी-भर गोरों और गोरापरस्तों से जीत नहीं सके, इसका क्या कारण है ?

(सब चुप रह जाते हैं ।)

दूसरा सिपाही : आप यहाँ तक कैसे पहुँचे, राजकुमार ?

कुमार : खेवट ने बताया ।

(इसी बीच राना बेनीमाधव पत्र लिखकर कुमार को देते हुए ।)

राना : घर जाओ । यह पत्र पिताजी को दो । आज से सातवें दिन आषाढ़ सुदी तेरस, दिन मंगलवार, सूर्य-लगन में हंसगौरी से तुम्हारा विवाह ।

कुमार : ऐसी परिस्थिति में विवाह ?

राना : क्यों ? तुम आज उदास लग रहे हो ।

कुमार : क्या आप उदास नहीं हैं ?

राना : शंकरपुर के लोग कैसे हैं ?

कुमार : शंकरपुर पर एक दहशत-भरी खामोशी छाई है। घरों के दरवाजे बन्द हैं। गाँव के बीचोबीच जहाँ ग्रामदेवता का चबूतरा है, पंचपुरी, उसके पास से गुजरते हुए, मैंने सुना—'अब राना बेनीमाधव के दस्तखत और मुहर लगा हुआ कागज दिखाए बिना न शंकरपुर में कोई आ सकता है न बाहर जा सकता है।' काकोजी, ऐसे में विवाह ?

राना : राना बाबा का आदेश है ।

कुमार : सिर-आँखों पर ।

(जाने लगता है ।)

राना : अकेले जाओगे ? यहाँ से शंकरपुर सोलह कोस है। रात हो चली है । रास्ते में जंगल पड़ेगा ।

कुमार : आपका आशीर्वाद मेरे साथ है ।

राना : आशीर्वाद तो मेरे साथ भी था ।

(सन्नाटा)

कुमार : क्षमा हो, राना बाबा कभी भी आपसे सहमत नहीं थे ।

राना : मैं कभी भी अपनी बात उन्हें समझा नहीं पाया ।

कुमार : ऐसा क्यों ?

राना : पता नहीं, क्यों।

कुमार : शायद यही कारण है जिससे हमारी यह हार हुई है।

राना : कैसा कारण ?

कुमार : पिता-पुत्र के बीच जब संवाद सम्भव नहीं, तो समाज में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच कैसे कड़ी जुड़ सकती है ? इसी कारण हम एक नहीं हो पाते और शत्रु के सामने हार जाते हैं। छोटे मुंह बड़ी बात कहने के लिए क्षमा चाहता हूँ। यह बात मुझे गुरुजी ने समझाई है। (जाते हुए सहसा मुड़कर) आप शंकरपुर कब आ रहे हैं ?

राना : सब कुछ पत्र में लिखा हुआ है।

(पिता के चरण-स्पर्श कर राजकुमार का जाना। राना बेनीमाधव के संकेत पर दो सिपाही उसके पीछे जाते हैं।)

□

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान : सूरजसिंह का घर।

समय : रात का पहला पहर।

(धीमे स्वरों में बिना किसी साज के विवाह गीत। लोग आपस में बातें कर रहे हैं।)

पहला व्यक्ति : राना बेनीमाधव आ गए हैं।

दूसरा : शंकरपुर के चारों तरफ राना के सिपाही तैनात हैं।

तीसरा : राना बाबा ने धूमधाम, गाजा-बाजा, सबकी मनाही कर दी है।

पहला : ईश्वर करे यह ब्याह निर्विघ्न संपन्न हो जाए।

(चिंतित सूरजसिंह का आना।)

सूरज : मुझे बहुत डर है, कहीं ऐसे ही समय पर अंग्रेज हमला न कर दें।

दूसरा : पिता होकर आज अशुभ न बोलो।

सूरज : मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

तीसरा : फरज करो मालिक, अंग्रेज अगर हमला भी कर देगा तो राना की पूरी तैयारी है लड़ाई करने की। शंकरपुरी डीह और सिवान के चारों तरफ राना की सेना तैनात है।

(राना बाबा के साथ राना बेनीमाधव और राजकुमार का आना। बाबा के इशारा करते ही हंसगौरी विवाह मंडप में आती है। वर-कन्या आसन पर बैठ जाते हैं। ब्याह का कर्मकांड शुरू होता है।)

बाबा : पंडितजी, मूलमंत्र पढ़ कर सप्तपदी कराओ !

पंडित : कर्मकांड का मामला है। यथासम्भव चेष्टा कर रहा हूँ।

बाबा : यह धर्म है, कर्मकांड नहीं।

(अचानक गोली चलने की आवाज के साथ कोलाहल सुनाई देता है और राना बेनीमाधव तीर की तरह निकलकर चले जाते हैं। लोग भयभीत हो जाते हैं।)

बाबा : कुमार ! हंसगौरी की माँग में सिंदूर भरो।

सूरज : ठहरो। सप्तपदी हुए बिना सिन्दूरदान कैसे हो सकता है ?

बाबा : हो सकता है कुमार, भरो सिन्दूर।

(कुमार सिंदूर भर रहा था कि सूरजसिंह हंसगौरी को खींचकर उठा लेते हैं। लड़ाई का दृश्य उभर आता है। कुमार तलवार खींचकर बाहर जाना चाहते हैं। राना बाबा उसे पकड़ लेते हैं। हंसगौरी को सूरजसिंह खींचता हुआ ले जाता है। दृश्य में केवल राना बाबा और कुमार रह जाते हैं। चारों ओर युद्ध छिड़ा हुआ है। कुमार, बाबा से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रहा है।)

कुमार : जाने दो मुझे। मैं लड़ूँगा। लड़ूँगा।

(चारों ओर से अंग्रेजों का आक्रमण। मंच अंधेरे में डूब जाता है। लड़ाई का कोलाहल। धीरे-धीरे मंच फिर प्रकाशित होता है। कुमार अब भी राना बाबा से लड़ रहा है—बाहर लड़ाई में जाने के लिए।)

कुमार : नहीं, नहीं, बाहर लड़ाई हो रही है।

बाबा : सुनो। सुनो।

कुमार : मुझे लड़ने दो।

बाबा : मेरी बात तो सुनो।

कुमार : नहीं, मुझे जाने दो।

(बाबा डाँटते हैं। कुमार चुप)

बाबा : वह लड़ाई खत्म हो गयी।

कुमार : क्या ?

बाबा : वह लड़ाई हार गए हम। सच्चाई को हम देखते नहीं। देखते हैं तो कबूल नहीं कर पाते—अहंकार...वही अहंकार।

कुमार : मेरे काकोजी...कहाँ हैं मेरे काको राना बेनीमाधव ?

बाबा : राना बेनीमाधव अपनी सेना सहित शंकरपुर छोड़कर भाग गए।

कुमार : क्या ?...मेरी माँ ?

बाबा : जब तुम्हारे काका लड़ते-लड़ते शंकरपुर छोड़कर भागने लगे, तुम्हारी माँ ने प्राण त्याग दिये।

(कुमार का रो पड़ना।)

बाबा : पहले जी भरकर रो लो।...फिर तुम्हें कुछ सौंपना चाहता हूँ।

कुमार : पर लड़ाई हो रही है।

बाबा : गरीब-भूखे अंग्रेज महल का सामान लूट रहे हैं।

कुमार : मैं उन्हें ऐसा नहीं करने दूंगा।

(रोक लेना।)

बाबा : जब राज नहीं तो महल कैसा ? क्या रखा है अब...। सब कुछ वे लूट ले जाएँगे। ले जाने दो। चिंता करो—मैं मार दिया जाऊँगा। तुम्हें भी गोली मार दी जायेगी। हमें तोप से उड़ा दिया जायेगा। देखो...इधर देखो...किले की दीवारें तोपों से उड़ाई जा रही हैं।

कुमार : बाबा, तुम इतने निर्दयी-बेरहम हो, यह पता न था।

बाबा : मुझे खुद पता न था।

कुमार : अब क्या होगा ?

बाबा : वही बताना चाहता हूँ। हम नहीं होंगे, पर वे बातें रक्तबीज बनकर इस भूमि पर गिरेंगी और रह जाएँगी। सुनो, ध्यान से सुनो, यह कैसे हुआ कि ऐसे भारत के ऊपर इस तरह अंग्रेजों का राज्य कायम हो गया ? मुगलों को उनके सूबेदारों ने तोड़ा। सूबेदारों की ताकत को मराठों ने खत्म किया। मराठों को अफगानों ने खत्म किया। (रुककर) इस तरह जब सब एक-दूसरे से लड़ने में लगे हुए थे, तब अंग्रेज उन सबको कुचलकर खुद भारतवर्ष के स्वामी बन बैठे। एक देश जिसका ढाँचा पारस्परिक विरोधों और अलगावों के ऊपर खड़ा हो, क्या दूसरों के हाथों फतह किए जाने के लिए ही नहीं बनाया गया था ? भारत का पिछला इतिहास लगातार पराजय का इतिहास है। उन आक्रमणकारियों का

इतिहास है, जिन्होंने आकर हमारे निर्जीव समाज के आधार पर अपने साम्राज्य कायम किये। समय-समय पर विजेताओं की तलवार इस देश को टुकड़ों में बाँटती रही है। अगर कृष्ण और राम का बंधन न होता तो यह देश कितने परस्पर विरोधी दुश्मन राज्यों में बँट जाता, ठिकाना नहीं।

(अचानक कुछ गिरने और टूटने की आवाज आती है।)

कुमार : मेरी माँ का शव कहाँ है ?

बाबा : तुम्हारी माँ के मरते ही मैंने महल के उस हिस्से में आग लगा दी।

कुमार : बाबा !

बाबा : यह गाँव, ऊपर से चाहे कितने ही भोले-भाले, मासूम हों, हिन्दुस्तान की तानाशाही, लूट और विनाश के ठोस आधार यही रहे हैं। जिन्होंने मनुष्य के दिल और दिमाग को छोटी-से-छोटी सीमाओं में बाँधे रखा है, उनकी सारी गरिमा और तेज उनसे छिन गया है। देश के इतने भयंकर हालात की तरफ देखकर इन गाँव वालों ने ऐसे मुँह फिरा लिया जैसे कि सब स्वाभाविक हो। वे स्वयं भी हर उस आक्रमणकारी लुटेरे का असहाय शिकार बनते रहे हैं। उनकी तरफ देखने तक की परवाह न की। इसी गाँव-गवई के जड़ जीवन ने ऐसी अंधी ताकतों और विश्वासों को भी जन्म लेने दिया, जहाँ मनुष्य की हत्या भी एक शानदार धार्मिक प्रथा बनने लगी।

(राना बाबा कुदाल लाकर जमीन खोदने लगते हैं।

(जमीन के भीतर से नन्ही-नन्ही हड्डियों को निकालकर दिखाते हैं।)

बाबा : देखो, देखो, अपने पुरखों की नवजात कन्याओं की अस्थियाँ। इनके गुनाह यही थे कि इनके पिता राजपूत क्षत्रिय थे। इनकी मातायें अबला थीं। दूसरा असली कारण भीतर है। एक पूरी चीज जो टूट-फूटकर न जाने कितने टुकड़ों में बिखर गई है, उसे फिर से पूरी चीज की शक्ल में दिखाने का प्रयत्न करना। एक सच्चाई निरंतर चलने वाली, आगे बढ़ने वाली, फूल और फल देने वाली, उसका रुक जाना, उसे फिर से चलाकर दिखाना। एक आग, उस पर न जाने कितनी राख, मलबा, कूड़ा-करकट आ पड़ा हो उसे, खोद-हटा उसी अग्नि से जुड़कर स्वयं आग हो जाना। एक प्रकाश, एक तेज, जिसे अंधकार की कितनी ही परतों ने आ घेरा हो, उसे चीर-फाड़कर फिर से प्रकाशित होना। एक वस्तु जो अपनी धुरी से हटकर गिर गई हो, उसे फिर से उठाकर उसकी बुनियाद, उसकी धुरी पर रखना, यही है, जो तुम्हें सौंप रहा हूँ।

कुमार : मेरे काका लड़ते-लड़ते मर क्यों नहीं गए? भाग क्यों गए?

बाबा : जिसे अपनी जान का भय है वह लड़ नहीं सकता। अपनी सच्चाई स्वीकार न कर पाने की मजबूरी कायरता को दुगुनी करती है। भीतर जितना ही बड़ा भय होगा, बाहर उतना

ही बड़ा आडम्बर होगा। हम सब यहीं थे। तेरे सारे पुरखे यहीं थे।

(सन्नाटा छा जाता है। बाबा की आँखें मुंद गई हैं। कुमार बाबा को हिलाता है।)

कुमार : बाबा! बाबा!

बाबा : तू अकेला बाहर जाना चाहता था? तू लड़ना नहीं आत्महत्या करना चाहता था, अकेला चारों ओर घिरी उस फौज से लड़ने के लिए चिल्ला रहा था।

कुमार : मेरे काको राना बेनीमाधव भागे क्यों?

बाबा : एक भागना योद्धा पुरुष का होता है, बाहर की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण। दूसरा भागना कायर मनुष्य का होता है, भीतर से मृत्यु-भय के कारण।

(बाबा फिर चुप हो जाते हैं।)

कुमार : सब लुट गया। सर्वनाश हो गया।

बाबा : बहुत अच्छा हुआ। मैं भी उसी झूठ और भ्रम में था कि इसी तरह चलेगा, चलता रहेगा।

(बाबा टटोलकर रस्सी का एक सिरा दिखाते हुए।)

बाबा : देखो यह क्या है?

कुमार : रस्सी का सिरा।

बाबा : इसका दूसरा सिरा कहाँ है? खींचकर देखो। यह कहीं से बँधा है, इस सच्चाई को उस सिरे पर जाकर ही देखा जा सकता है। यह रस्सी घूमती नहीं। लौटती नहीं। सिर्फ आगे बढ़ती है। हम कहाँ से बँधे हैं? सूत्र कहाँ है, हम यह देखने के लिए पीछे नहीं जा सकते। कैसा भी

समय हो, कैसा भी सुख और संकट हो, कितनी भारी विपत्ति हो, हम पीछे नहीं जा सकते। हम पीछे भागते हैं। पर पीछे जा नहीं सकते। देखो यह रस्सी।

(कुछ सिपाहियों के चलने की आवाजें आती हैं।)

बाबा : अंग्रेज सिपाही टूटे-उजड़े महल में अब भी न जाने क्या ढूंढ़ रहे हैं ?

कुमार : ऐसा किसी ने नहीं किया, मुगल सुलतान, पठान।

बाबा : भूल जाओ नवाब, मुगल सुलतान, पठान, तुर्क, मंगोल को, वे सब पूरब के थे। इसलिए पूरब में पूरब मिल गया। पर भारतवर्ष और अंग्रेज ये दो बिल्कुल जुदा चीजें हैं।

(कुमार चारों तरफ देखता है।)

कुमार : चारों तरफ अंग्रेजों की सेना घेरा डाले है।

बाबा : यही है अंग्रेज, नया राजा।

कुमार : नया राजा ?

बाबा : अब इससे कोई अकेले नहीं लड़ सकता, इससे लड़ाई करनी होगी सबको मिलाकर, सबको जगाकर। इस लड़ाई का केवल एक केन्द्र नहीं होगा, अनेक केन्द्र होंगे, जितने केन्द्र भारतीय धर्म में हैं।

कुमार : भारतीय धर्म ?

बाबा : हाँ, भारतीय धर्म। हिन्दू धर्म नामक यहाँ कोई धर्म नहीं है। धर्म यहाँ सनातन है। सनातन धर्म जो आत्मदानी है। सबको स्वीकार करने वाला जो सारे बिछड़े हुए अंशों को एक में मिलाने

वाला और सबको स्वीकारने का सनातन भाव है, वही है सनातन धर्म। सनातन जीवन।

कुमार : इस सनातन धर्म में वह अंग्रेज नहीं हैं क्या ?

बाबा : क्यों नहीं, वह भी हैं। पर सबको संपूर्ण मानकर जीने वाला यह भारतवर्ष जीवित बचे तब तो ! अगर भारत जीवित न बचा तो केवल पश्चिम रहेगा, उसमें पूरब-उत्तर-दक्षिण नहीं होगा। पश्चिम का मतलब है केवल अर्थ।

(पृष्ठभूमि में ढिंढोरा पीटने की आवाज आती है। महारानी विक्टोरिया की घोषणा सुनाई जा रही है।)

घोषणा : सुनो ! सुनो !! मलिका विक्टोरिया, महारानी विक्टोरिया का फैसला। उनके फरमान सुनो। हिन्दुस्तान में कम्पनी का राज अब खत्म हुआ। सारी हुकूमत अब महारानी विक्टोरिया ने अपने हाथों में ले ली है। सिवा उन लोगों के जो अंग्रेजों की हत्या में भाग लेने के अपराधी हैं— बाकी जो भी लोग हथियार रख देंगे उन सबको माफ कर दिया जाएगा।

बाबा : सुन लिया न ? अंग्रेजों ने पल-भर में इतनी बड़ी फूंक मारी कि सारी रोशनियाँ आँख झपकते भर में बुझ गयीं। पर सुनो कुमार ! कुमार संभव है।...कु...मार...।

कुमार : कुमार संभव है ?

बाबा : अंग्रेज जीत गये...भले ही जीत गये। याद रखना,

अंग्रेज प्रज्ञा गुलामी की है। आर्य प्रज्ञा स्वतंत्रता की है। इसी बीज को मलबे के भीतर से बीन लेना है और फिर से जमीन तैयार कर उसमें बो देना है। इस बीज को देखो, हमने खुद अपने हाथों से अपने ऊपर कितने अत्याचार किये हैं। जानते हो आचार का अतिक्रमण ही अत्याचार है। मर्यादा उल्लंघन ही अत्याचार है। हम अत्याचार से अत्याचार की लड़ाई नहीं लड़ सकते। लड़ाई है तो केवल राम और रावण के बीच। राम का राज्य लोक में, हृदय में है। राम ऐसे राजा हैं, जिनकी अपनी कोई व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है। पर रावण का राज्य, देवताओं को, सारी प्राकृतिक शक्तियों को अपनी गुलामी में रखने का है। उसके राज्य का लक्ष्य है अर्थ, व्यापार-वाणिज्य; उसकी मर्यादा है व्यक्तिगत सम्पत्ति...। मैं...मैं...। 'हम' नहीं।

(बाबा का चुप हो जाना।)

कुमार : बाबा, सुबह हो गयी।

(बाहर से वही ढिंढोरा पीटने की आवाज।)

घोषणा : हिन्दुस्तान मुल्क, जो अभी कंपनी के सुपुर्द था, अब मलिका विक्टोरिया ने अपने हुकूमत में ले लिया।

बाबा : देखना इस चाल को। हर क्षण जगे रहना! जैसे वह क्षण आये, पकड़ लेना, जैसे प्रेम आता है!

(कुमार बाबा का चरण स्पर्श करता है।)

बाबा : जाओ। बढ़ो। सीधे जाकर अंग्रेजों के सामने

हाजिर हो जाओ, जाओ, घूमकर मत देखना, उन्हें मेरा पता बता देना।

कुमार : आपका पता बाबा?

बाबा : जहाँ तुम होगे।

(कुमार का बाहर जाना।)

□

दूसरा दृश्य

स्थान : शंकरपुर के मैदान में अंग्रेजों की छावनी।
समय : प्रातःकाल।

(दृश्य में गाँव के लोग बंदी बने बैठाए गए है। अंग्रेज सेनाधिकारी होपग्रान्ट कुर्सी पर बैठा है, और उसके बगल में सूरजसिंह घमंडपूर्वक खड़े हैं। राजकुमार का प्रवेश।)

कुमार : मैं राजकुमार, वल्द श्रीयुत राना बेनीमाधव, साकीन शंकरपुर।

होपग्रान्ट : वेरी गुड ! वेरी गुड ! तुम बड़ा होशियार है। तुम्हारा बाबा किधर है ?

कुमार : मैं इसी शर्त पर आपके सामने हाजिर हूँ, मेरे बाबा को न पकड़ा जाए।

होपग्रान्ट : ओ किधर है ? उसे हाजिर करो।

(सूरजसिंह होपग्रान्ट के कानों में कुछ कहते हैं।)

सूरज : ठीक है, जाकर उधर बैठ जाओ।

कुमार : सर, आपसे निवेदन है, इन सबकी जो मुश्कें बंधी हुई हैं, उन्हें खोल दिया जाए। यह मेरी जिम्मेदारी है, यहाँ से अब कोई नहीं भागेगा।

होपग्रान्ट : इसने मुझे 'सर' कहा, इसकी बात जरूर मानी जाएगी।

(होपग्रान्ट के इशारे से लोगों की मुश्कें खोल दी जाती हैं।)

होपग्रान्ट : तुम लोग उधर क्या देखता है ! लोगों को फाँसियाँ दी जा रही हैं। हमारी खिलाफत का मतलब है फाँसी।

(पृष्ठभूमि से लोगों की चीखें, बन्दूक की आवाजें, लोगों के रोने, गिड़गिड़ाने की आवाजें आ रही हैं। एक सिपाही फकीर दुआशाह को गिरफ्तार कर ले आता है। वहाँ का सारा दृश्य देखकर दुआशाह गा पड़ते हैं।)

है जल्वा-ए-तन से दरो दीवार बसन्ती।
पोशाक जो पहने हैं मेरा यार बसन्ती।
क्या फस्लेबहारी ने शगूफे हैं खिलाये।
माशूक हैं फिरते सरे बाजार बसन्ती॥

होपग्रान्ट : (गुस्से में) फाँसी पर चढ़ा दो इस बेवकूफ को।

(सिपाही दुआशाह को दबोच लेते हैं।)

कुमार : सर, यह फकीर है, दुआशाह।

होपग्रान्ट : फकीर ? फकीर क्या होता है ? क्या काम करता है ? इसकी कमाई क्या है ?

कुमार : सबसे मुहब्बत करने वाला, सबको दुआ देने वाला।

(दुआशाह फिर गा पड़ता है।)

हमसे न बोलो पिराय मोरी अँखियाँ।
हम से न बोलो !.....
रात कहे पिया झुलनी गढ़ा दूँ !
झुलनी गढ़ा दूँ !

होत बिहान बिसर गयी बतियाँ।
हम से न बोलो।...

(सारे लोग इस गीत को गुनगुनाने लगते हैं। होपग्रान्ट मारे गुस्से के सबको हण्टरों से मारने लगता है। सब चुपचाप उसकी मार सहते हैं। होपग्रान्ट आर्डर देता है। और सारे लोग वहाँ से हटा दिये जाते हैं।)

होपग्रान्ट : सूरजसिंह, यही है वह राजकुमार, जिससे तुम्हारी 'डॉटर' की 'मैरिज' हो रही थी ?

सूरज : जी हाँ।

होपग्रान्ट : लोगों का विश्वास है जब हमने शंकरपुर पर 'अटैक' किया, तब तक 'मैरिज' पूरी हो चुकी थी।

सूरज : नहीं सरकार, धर्मावतार, शादी बिलकुल नहीं हुई।

(राजकुमार का प्रवेश।)

कुमार : एक निवेदन है।

होपग्रान्ट : क्या है ?

कुमार : पेड़ों से झूलती लाशों को उतारकर नीचे जमीन पर रखने की इजाजत चाहता हूँ। लाशें सड़ रही हैं।

होपग्रान्ट : कौन उतारेगा ? तुम ?

कुमार : जी हाँ, मैं।

(कुमार का जाना)

होपग्रान्ट : यह राजकुमार मुझको बड़ा 'इंटर्स्टिंग' लगता है। देखो सूरजसिंह, वह अकेले पेड़ों पर चढ़कर लाशें उतार रहा है।

सूरज : इन लाशों को जला देना चाहिए, हुजूर।

होपग्रान्ट : ऐ, ले जाओ इन लाशों को जला दो।

(होपग्रान्ट पृष्ठभूमि में देखने लगता है। लोग गाते जा रहे हैं।)

होपग्रान्ट : इस मुल्क का आदमी बड़ा अजीब है। हर वक्त गाता है, 'इडियट'। वह फकीर आगे-आगे गाता जा रहा है। लोग लाशें उठाये हुए उसके पीछे-पीछे जा रहे हैं। सूरजसिंह, ये लोग जो गाते हुए जा रहे हैं, वह कोई 'पोलिटिकल सांग' तो नहीं है ?

सूरज : जी नहीं, सरकार। वह गा रहे हैं—

जननी, बिनु राम हम न अवध मा रहिबै।

होपग्रान्ट : इसका मतलब क्या है ?

सूरज : लोग अंग्रेजी राज्य की तारीफ कर रहे हैं, सरकार।

होपग्रान्ट : वेरी गुड ! वेरी गुड !! देखो सूरजसिंह, अवध में तालुकेदारी खत्म हो गयी। तुमने अंग्रेजों की मदद की, इसलिए हम तुम्हें शंकरपुर और इसके आसपास के पचास गाँव की जमींदारी इनाम में देते हैं।

सूरज : अंग्रेज बहादुर की जय हो।

(होपग्रान्ट के पैरों पर सूरजसिंह गिर पड़ते हैं। होपग्रान्ट उन्हें ठोकर मारता है)

होपग्रान्ट : तुम आदमी है कि जानवर ?

(वही गायन वातावरण में छा जाता है।)

जननी, बिनु राम हम ना
अवध मा रहिबै।

□

चौथा अंक

पहला दृश्य

स्थान : पंचपुरी का चबूतरा।
समय : रात का पिछला पहर।

(राजकुमार जमीन पर लेटा है। हंसगौरी हाथ में थाल लिए आती है)

कुमार : (सहसा उठकर) कौन ? हंसगौरी, तुम ?

गौरी : सोये नहीं थे ?

कुमार : बाबा की याद बनी रहती है—कहा था—हर क्षण जगे रहना।

गौरी : लो, सिन्दूर से मेरी माँग भर दो।

(माँग भरना। हंसगौरी कुमार के चरण रज अपने माथे पर लगाती है।)

कुमार : फिर यह आरम्भ !

गौरी : आरम्भ से पहले भी आरम्भ है। सन्ध्या बेला का दीपक जलाने के लिए बत्ती सवेरे ही बट लेनी पड़ती है। अच्छा, अब चलूंगी।

कुमार : कहाँ ?

गौरी : तब से हर रात के पिछले पहर तुम्हें ढूंढ़ने निकलती थी। इसी तरह। ढूँढ़ती-ढूँढ़ती वापस लौट जाती थी। आज वापस नहीं जा रही, आ रही हूँ तुम्हारे पास। मेरे ऊपर मेरे पिता का पहरा है। पर यह कितना आश्चर्यजनक है, देखो !···

(हंसगौरी का जाना। कुमार वहीं खड़ा देखता रह जाता है। धीरे-धीरे सबह होती है। पृष्ठभूमि से डुगडुगी बजाकर कोई घोषणा करता है।)

घोषणा : जमींदार बहादुर सूरजसिंह का हुकुम है, जो कोई अपनी फरियाद लेकर राजकुमार के पास जायेगा, उसका घर-बार उजाड़ दिया जायेगा। हर तरह की फरियाद सुनने के लिए जमींदार बहादुर राजा सूरजसिंह हैं। जमींदार राजा बहादुर से पूछे बिना यहाँ कुछ भी नहीं हो सकता।

(गाँव के दो आदमी आते हैं। राजकुमार को देखते ही अस्सी साल के जगताप बाबा झुककर प्रणाम करते हैं। इस पर गबदू पांडे नाराज होते हैं।)

गबदू : हमने कितनी बार मना किया, कि ई सब राना के जमाने में चलता था। ऊ जमाना अब लद गया। अब जमाना है जमींदार बाबू सूरजसिंह का। अब तालुकेदारी नहीं, जमींदारी है।

जगताप : हाँ, हाँ, अब का जमाना बेशक नया है भइया। ऊ जमाने का अब कुछ न रहा। मूल मुसीबत तो यह है कि ऊ जमाने के हम पंच इ जमाने में रहि गये।

कुमार : आओ जगताप बाबा ।

गबदू : जमींदार साहब देखेंगे तो मुसीबत होगी बाबा।

जगताप : जैसी भगवान् की इच्छा होगो वही होगा ।

गबदू : मैं तो चला भैया ।

(गबदू का जाना)

जगताप : भइया, अभी इस चबूतरे पर लगान को वसूली चलेगी । बड़े-बड़े गुमासता लगान की वसूली करेंगे । प्रजा पर लाठी बरसेगी । लोगन को गाँव से भगा दिया जायेगा। अब धरती माता बिकाऊ हो गयी ।

कुमार : हाँ बाबा, यही है अंग्रेजों की नयी चाल । क्या दिमाग है अंग्रेज का भी । सत्तावान् की लड़ाई देखकर अँग्रेज सरकार ने तय किया है कि राजा और प्रजा का सीधा रिश्ता ही तोड़ दो । बीच में ला दो जमींदार को। इससे दो काम बनेंगे। लूटने और चूसने को एक मजबूत स्थायी आधार मिलेगा । प्रजा, राजा-जमींदार से लड़ेगी। अंग्रेज तक किसी की पहुँच ही न हो पाएगी ।

(गुमाश्ता तीन व्यक्तियों को खदेड़ता-मारता हुआ आता है । राजकुमार एक तरफ खड़ा रह जाता है ।)

पहला व्यक्ति : ई लगान हमरे मान का नाहीं ।

दूसरा : हम तो शंकरपुर छोड़ के रायबरेली के बाजार में रहते हैं साहेब । हमारे ऊपर कैसी लगान ?

गुमाश्ता : अबे चुप ! ऊ तालुकेदारी नाहीं है अब, जब चाहा एक गाँव छोड़ के दूसरे में जाइ बसै । ई है

जमींदारी। अंग्रेज सरकार से पक्की सनद मिली है जमींदार राजा-बहादुर को ।

जगताप : (राजकुमार से) देखो भइया, रियाया के पास है ही क्या ? शरीर है, भूख है, डर है। सो बेगार लेकर जमींदार ने पहले अपनी हवेली बनवाई। बाग-बगीचे बनवाए । अपनी खेती खड़ी की। दिन-रात बेगार। चमार बेगार में जूते बनाकर दे । कुरमी-अहीर हल-बैल के साथ बेगार में खेती करे ।

गुमाश्ता : अबे कौन है तू ? बड़-बड़ कर रहा है !

जगताप : अरे भगवान् से डरा करो, भगवान् से ।

गुमाश्ता : अरे हम जमींदार साहब से क्या कहेंगे ? सारी जबाबदेही तो हमारी है ।

कुमार कह देना जमींदार से कि आपके दामाद ने ऐसा किया है—जिसके पास खाने के लिए अन्न नहीं है, रहने के लिए झोंपड़ी नहीं है, वह लगान नहीं देगा ।

(सारे लोग राजकुमार को झुककर प्रणाम करते हैं ।)

कुमार : देखो, अब किसी को झुकना नहीं है ।

गुमाश्ता : यह खबर मैं राजा जमींदार को दूंगा, हाँ ।

(गुमाश्ता चला जाता है । दूसरी ओर से गंगादीन आता है, बिल्कुल फटे हाल, मूँछ-दाढ़ी बढ़ाए ।)

गंगा : भैया, मैं गंगादीन ।

एक व्यक्ति : गंगादीन ! नहीं-नहीं, यह तो गंगादीन का भूत है ।

दूसरा : गगादीन सिपाही तो लड़ाई में मारा गया । यह जरूर उसी का भूत है ।

कुमार : आओ, इधर आओ गंगादीन।

(वह जैसे ही बढ़ता है सारे लोग 'भूत-भूत' चिल्लाते हुए भाग जाते हैं। गंगादीन और कुमार दोनों हँसते हैं।)

कुमार : बोलो भाई गंगादीन, कैसे हो ? मेरे काकोजी कहाँ हैं ? कैसे हैं ? उन्हें कहाँ छोड़ा ?

गंगा : हमने राना बेनीमाधव को नहीं छोड़ा। राना ने तराई के जंगल में मुझसे कहा—गंगादीन, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, तुम शंकरपुर लौट जाओ। लोगों को बताओ, राना बेनीमाधव जिन्दा हैं।

(उसी समय जमींदार सूरजसिंह अपने सिपाही के साथ आते हैं।)

कुमार : प्रणाम करता हूँ जमींदार साहब। गंगादीन, तुम भी इन्हें प्रणाम करो। ये हमारे गाँव के जमींदार साहब हैं।

(गंगादीन प्रणाम करता है।)

सूरज : गंगादीन, मेरे साथ आओ। तुमसे जरूरी बातें करनी हैं।

गंगादीन : मुझे अभी राजकुमारजी से कुछ जरूरी बातें करनी हैं।

कुमार : जाओ, इनकी आज्ञा का पालन करो।

(गंगादीन साथ जाता है। छिपकर उनके पीछे-पीछे राजकुमार भी जाता है। चलते-चलते सूरजसिंह और गंगादीन हवेली में पहुँच जाते हैं। कुमार बाहर ही ओट में हो जाता है।)

सूरज : सच-सच बताओ, गंगादीन। अब तुम किसके हो ?

गंगा : सरकार, आपका हूँ।

सूरज : यह लो पाँच सौ रुपए। तुम्हारे लिए हैं। राजकुमार को समझाना कि वह भूल जाए कि हंसगौरी से उसका विवाह हुआ है। सच तो यह है कि विवाह तो हुआ ही नहीं। देखो न, विधि का विधान ही कुछ और था। नहीं तो विवाह हो नहीं गया होता ? खैर, ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है। मैं अपनी बेटी के लिए उचित वर ढूंढ़ रहा हूँ।

(गंगादीन एक अजीब ढंग से हँस पड़ता है। दूसरी ओर कुमार के सामने हंसगौरी छिपकर आती है। कटोरी में उँगली डाल उसके माथे पर एक टीका लगा देती है।)

गौरी : यह अशोक षष्ठी का टीका है। तुम्हें कभी कोई दुख न हो, शोक न हो। माँ ने भेजा है। देखो, वहाँ खड़ी है माँ, आशीष दे रही है।

(हंसगौरी चली जाती है। गंगादीन आता है। दोनों हँस पड़ते हैं।)

गंगा : तो तुमने यहीं खड़े-खड़े सब सुन लिया ?

कुमार : सुना ही नहीं, देख भी लिया।

गंगा : तुम्हारी पत्नी की दूसरी शादी का इंतजाम हो रहा है और मेरी पत्नी ने कहला दिया है कि मैं फिरंगी फौज में गया था, इसलिए भ्रष्ट हो गया हूँ। जब शुद्धि करवा लूंगा तभी वह घर आएगी। और मज़े की बात तो यह है कि मुझे

यही नहीं पता कि मेरी शादी कब हुई और किससे हुई ! सुना है वह बड़ी भंयकर, बड़ी जबर्दस्त औरत है। डंडा लेकर चलती है। साक्षात् काली माई है, खप्पर लिए हुए।

(दोनों हँसते हैं।)

□

दूसरा दृश्य

स्थान : पंचपुरी का चबूतरा।
समय : संध्या।

(गाँव के लोगों के साथ राजकुमार, गंगादीन आदि बैठे, जगताप बाबा से महाभारत सुन रहे हैं।)

जगताप : तो पंचो, विधि का विधान देखो। यह वह बाण था जो लोहे के मूसल के टुकड़े का बना हुआ था। तो बहेलिया का वह बाण जाकर भगवान् के चरणों में, क्योंकि वही भगवान् की इच्छा थी। भगवान् ने शिकारी को बुलाया, इधर आओ। शिकारी मारे डर के थर-थर काँप रहा था। हाथ जोड़कर उसने कहा—हे कृपानिधान, मुझे कुछ भी न मालूम था। अपना समझकर मुझे क्षमा करो। हे नारायण, तुम्हारा चरण ही मेरी शरण है। कृष्ण ने कहा, डरो मत। तुम निर्दोष हो।

(पृष्ठभूमि से किसी के रोने की आवाज सुनाई देने लगती है।)

कुमार : यह कौन रो रहा है ? अरे ! यह तो खेवट रोता हुआ आ रहा है। साथ में दुआशाह फकीर।

(दुआशाह के साथ रोते हुए खेवट का आना।)

कुमार : क्या बात है खेवट ?

खेवट : राना बेनीमाधव नहीं रहे।...राना तराई के जंगल में...।

(सारे लोग रो पड़ते हैं। सिर्फ दुआशाह गाता रहता है।)

दुआशाह : (गाना) अवध माँ राना भयो मरदाना।
पहिल लड़ाई भइ बक्सर माँ, सेमरी के मैदाना,
उहाँ से जाए पूरबा माँ,
जित्यो तबै लाट घबड़ाना,
नक्की मिले मानसिंह मिल गए,
मिले सुदर्शन काना,
छत्री बंस एकु ना मिलिए जाने सकल जहाना।

(सारे लोग चले जाते हैं। दृश्य में खेवट, गंगादीन, दुआशाह और राजकुमार हैं।)

खेवट : तराई के जंगल में अंग्रेज शिकार खेल रहे थे। राना विश्राम कर रहे थे। अंग्रेज की दो गोलियाँ उनके सीने में लगीं। राना का शव अंग्रेज ढूँढते ही रह गए। शव अन्तर्धान हो गया। फिर अंग्रेज खिसिया गये। जंगल में आग लगा दी। मरणासन्न अवस्था में राना ने जंगल के किनारे एक किसान को देखा। किसी तरह उस तक गए। अपना नाम बताया। कहा—देखो, गौर से देख लो मुझे। कोई मुझे ढूँढ़ता आए तो उसे मेरी यह तलवार दे देना। उसे बताना कि तुमने यहाँ क्या देखा। साफ कह देना कि हम बुरी तरह से हार गए। हम इसीलिए हारे कि

प्रजा उस तमाम दौलत और शान-शौकत से तंग आ चुकी है जिसे हमने, उन्हीं लोगों के खून-पसीने और हड्डी-पसली से निचोड़ा है। दूसरी बात हम कभी एक होकर नहीं लड़े। हम हमेशा—अमीर और गरीब, राजा और प्रजा, ऊँच और नीच के टुकड़े बनकर एक-जान अंग्रेज से हारते रहे।

(राना बेनीमाधव की तलवार लेकर गंगादीन माँजने लगता है। सहसा सूरजसिंह का प्रवेश।)

सूरज : रुक जाओ। मुझे दो राना की तलवार। यह मेरे दरबार में रहेगी।

गंगा : राना की तलवार अब पूरे शंकरपुर की है।

सूरज : सारा शंकरपुर मेरा है।

(लोग उस तलवार को देखकर रोने लगते हैं।)

कुमार : क्या रखा है अब इस तलवार में। दे दो इन्हें ताकि अंग्रेजों को इसे भेंट करके इनाम पा सकें। जानते नहीं, अंग्रेज जमींदारी में तलवार रखना जुर्म है। अब राजा-जमींदार महज शोभा के लिए अपनी बैठकों में तलवार नहीं, सिर्फ म्यान लटका देंगे। वे थक गए हैं अंग्रेजी राज की सलामी बजाते-बजाते।

(कुमार अपने हाथों से पिता की तलवार सूरजसिंह को दे देता है। सूरजसिंह मारे घमण्ड के अकड़ते हुए चले जाते हैं।)

गंगा : अकड़ रहे हैं सूरजसिंह। लिफाफिए बादशाह!

खेवट : गद्दार, घमण्डी!

दुआशाह : बड़े पुण्य किये थे उन हाथों ने जो राना बेनी-माधव की तलवार थामी ।

कुमार : उनके पास यह तलवार जीत की नहीं हार की निशानी है ।

(दुआशाह और खेवट गाते हैं ।)

आज मोहिं रघुवर की सुधि आयी ।
आगे आगे राम चलत हैं,
पीछे लछिमन भाई
ताके बीच चलत जानकी
बिपदा कही न जाई ।
आज मोहिं रघुवर की सुधि आयी ।।

□

तीसरा दृश्य

स्थान : सूरजसिंह का दरवाजा ।
समय : दोपहर ।

(गाँव के तमाम गरीब लोग पात्र लिए जमींदार के दरवाजे पर आ रहे हैं । गुस्से में भरे हुए सूरजसिंह का प्रवेश ।)

सूरज : यह क्या तमाशा है ? क्या चाहते हैं ये लोग ?

दुआशाह : बेटी हंसगौरी ने सबको मनसा प्रसाद पाने के लिए बुलाया है ।

सूरज : चले जाओ यहाँ से ।

(प्रसाद लिए हंसगौरी का प्रवेश । वह सबको प्रसाद बाँटने लगती है ।)

सूरज : ठीक है, प्रसाद ले लो और चलते बनो ।

(प्रसाद लेकर सब लोग चले जाते हैं ।)

सूरज : सबको इस तरह मनसा प्रसाद बाँटने का मतलब ?

गौरी : राना बाबा ऐसा ही करते थे ।

सूरज : कौन राना बाबा ?

गौरी : वही, मेरे परम पूज्य, मेरे जीवनदाता, मेरे रक्षक ।

सूरज : तो ?

गौरी : मनसा पूजा ग्राम देवता की पूजा है। तब से यहाँ मनसा पूजा नहीं हुई।

सूरज : तुमसे मतलब ?

गौरी : जब मनसा पूजा हुई तो लोग प्रसाद बिना कैसे रहते ?

सूरज : किसने की मनसा पूजा ?

गौरी : हमने।

सूरज : हमने ? माने ?

गौरी : मैंने और उन्होंने।

सूरज : उन्होंने ? कौन ??

गौरी : हंसगौरी और राजकुमार ने।

सूरज : राजकुमार ? उससे तुम्हारा क्या सम्बन्ध ?

गौरी : जब आप सब कुछ जानते हुए भी नहीं समझ रहे हैं तो क्या कहूँ ?

सूरज : तुम्हें पता है, सब कुछ बदल चुका है। तुम्हारा उससे अब कोई रिश्ता नहीं।

(सूरजसिंह का गुस्से में जाना। हंसगौरी चुपचाप वहीं खड़ी रह जाती है। धीरे-धीरे अंधेरा छा जाता है और कुछ स्त्री आकृतियाँ उभरती हैं।)

गौरी : क्या नाम है तुम्हारा ? ओह जू ! जू ! नहीं-नहीं, जानकी, जानकी नाम है तुम्हारा। तुम्हारी सब हड्डियाँ टूटी हुई हैं ? 'मेरी माई बेहोश पड़ी थीं, जब नौकरानी ने मुझे जमीन के नीचे पत्थर से दबाया।'...ओह तुम्हारा क्या नाम है ? 'मेरा तो कोई नाम ही नहीं है, दो दिन की हुई कि जमीन के नीचे दबा दी गयी।' पर तुम तो

उमा होने के लिए आयी थीं।...ओह तुम क्या देख रही हो ? 'तुम्हें।' मुझे ? 'अच्छा दीदी, बोलो तो भला मेरे पिता कहाँ है ? मर गये ? मेरे बाप ने मुझे क्यों मारा ?...मारने को तो मार डाला मगर मैं मरी क्यों नहीं ?' अंग्रेजों की तोप के सामने क्या बच गये तुम ? 'सब तो मरे हुए ही थे, बस, मर जाने का बहाना ढूंढ़ रहे थे। आओ दीदी। हम लोग नाचें। हम लोग गायें।'

(नाचना-गाना)

(यह सारा दृश्य सूरजसिंह छिपे देख रहे थे। हंसगौरी पिता को देखकर चुप खड़ी रह जाती है।)

गौरी : कक्काजी, आप क्या देख रहे थे ? मैं कहाँ चली गयी थी ?

सूरज : मैं तुझे अब यहाँ रहने नहीं दूंगा।

गौरी : आप मुझे कहाँ छिपा देंगे ?

सूरज : मैं तुझे अब भी जिन्दा जमीन में गड़वा सकता हूँ।

गौरी : मैंने ऐसा क्या अपराध किया कक्काजी ?

सूरज : कान खोलकर सुन लो। या तो जहाँ मैं कहूँ, वहाँ शादी करने के लिए तैयार हो जाओ या अपनी पूरी जिन्दगी विधवा की तरह यहाँ बसर करो।

गौरी : कक्काजी, जब मेरा पति जीवित है तो मैं···।

सूरज : हाँ, हाँ, रुक क्यों गईं ?

गौरी : मैं उस अपशब्द को अपनी जबान पर नहीं ला सकती। हाँ, एक वचन देती हूँ—मैं उनसे तब

तक नहीं मिलूंगी, जब तक आप नहीं चाहेंगे।

सूरज : आज से इस घर के बाहर तुम पैर नहीं रखोगी।

गौरी : उनसे यही कहने के लिए सिर्फ एक बार उनसे मिलूंगी।

सूरज : सिर्फ एक बार।

(सूरजसिंह का जाना। दूसरी तरफ से सोनपत्ती हँसती हुई आती है।)

गौरी : यह कैसे हुआ सखी, मैंने तुम्हें याद किया और तुम आ गईं।

सोनपत्ती : मैं तो तुम्हारे दिल की बात जानती हूँ सखी।

गौरी : क्या जानती है ?

सोनपत्ती : उनके पास चलना है न ?

गौरी : हाँ, अभी चलना है, इसी वक्त।

सोनपत्ती : आओ, तुम्हारा शृंगार कर दूँ सखी।

(सोनपत्ती गौरी का शृंगार करती है। पृष्ठभूमि में संगीत उभरता है। दोनों का चलना। सामने राजकुमार का दिखना।)

सोनपत्ती : देखो, कौन आयी है।

कुमार : ओह, तुम !

(हंसगौरी अपना सुहाग दुपट्टा बिछाते हुए।)

गौरी : यह है हमारे घर का अन्तःपुर और यही है हमारी पुष्पशय्या।

सोनपत्ती : अब मैं जाती हूँ बहना। आप इन्हें वापस घर तक पहुँचा जाइयेगा। फिर पूरा हो जायेगा गौना।

(सोनपत्ती का जाना।)

कुमार : तुम्हें एक भेंट दूँगा।

(चीजों के भीतर से लाल कपड़े में बँधी हुई कोई चीज गौरी की दाईं हथेली में रखते हुए।)

गौरी : यह है क्या ?

कुमार : देखो क्या है ? तुम देखो।

गौरी : शंख रूपी एक सीपी है, जिसके भीतर केवल शून्य है।

कुमार : यही शून्य, बीज रूप में प्रज्ञा है। इसी प्रज्ञा के विरोध में अंग्रेजों से लड़ते हुए सभी राजा खड़े थे। वे चाहे हिन्दू राजा हों या मुसलमान राजा।

(हंसगौरी अपलक कुमार को देख रही है।)

कुमार : इस शदे के साधु-सन्तों ने, हमारे पुरखों ने, इसी बीज को, इसी अलख निरंजन को, किस तरह अपने हृदय में सुरक्षित रखा ! देखो···।

(दोनों एक-दूसरे का हाथ थाम लेते हैं।)

कुमार : तुम्हें पाकर मैं धन्य हूँ।

गौरी : हे ईश्वर ! अब कभी भी हमारा विच्छेद न हो, विरह चाहे जितना हो।

कुमार : यह देखो, यह दूब, इसी माटी में हमारे राना बाबा की मिट्टी की धूल है। मैं बाबा की यह बोली सुनता हूँ—'मैं मरा नहीं हूँ। सिर्फ मिट्टी में मिलता जा रहा हूँ। मेरे शरीर के चारों ओर घास उग रही है। सूँघो इस दूब को। सूँघो।'

(हंसगौरी जमीन पर हाथ फेरती हुई।)

गौरी : यह वही सुगन्ध है ! जब पहली बार राना बाबा की गोद में खेली। फिर जब तुम्हें देखा विवाह के दिन, फिर आज···वही सुगन्ध।

□

पाँचवाँ अंक

पहला दृश्य

स्थान : पंचपुरी का चबूतरा।
समय : आधी रात।

(दृश्य में केवल राजकुमार और गंगादीन हैं।)

कुमार : हार की वजह तुम्हें पता है।
गंगादीन : नहीं, वजह मैं नहीं जानता।
कुमार : नकली लोग असली लड़ाई नहीं लड़ सकते।
गंगादीन : कैसा नकली ? कौन नकली ?
कुमार : एक था वीर राजा। नीति, नियम, न्याय यही थी उसकी वीरता। धन-धान्य से भरा था उसका राज्य। कभी कोई राजा उसके राज्य पर हमला करने की हिम्मत नहीं करता था। समय बीता। राजा वृद्ध हो गया। मृत्यु-शय्या पर पड़े उसने अपने परम विश्वासपात्र सेनापति और मन्त्री से कहा—'मैं मरने जा रहा हूँ। जल्दी से जल्दी मुझसे मिलती-जुलती शक्ल का एक आदमी ढूंढो और उसे मेरे नाम पर राज दे दो।

किसी को कानों-कान खबर न हो कि मैं मर गया।' ऐसा ही हुआ। असली राजा की जगह नकली राजा का राज चलता रहा। संयोग से शिकार खेलते हुए एक विदेशी राजा इस नकली राजा के राज में चला आया। राजा को प्रणाम करने वह विदेशी राजा उसके दरबार में गया। उसका खूब आदर-सत्कार हुआ। विदेशी राजा के सामने भोग-विलास, बहादुरी के खूब दिखावे हुए। विदेशी राजा को पता लग गया कि यह असली राजा नहीं है। फिर क्या था, उस विदेशी राजा ने चढ़ाई कर दी। नकली राजा, उसके मन्त्री और सेनापति आक्रमणकारी राजा से युद्ध करने के बजाय यह साबित करने में लगे रहे कि वर्तमान राजा ही असली राजा है। हार पर हार होती रही। आक्रमणकारी राजा को सबूत पर सबूत मिलता गया कि राजा नकली है। फिर क्या, सारी प्रजा अपने असली राजा के लिए रोने में लग गई और असली विदेशी राजा नकली स्वदेशी राजा के सामने जा खड़ा हुआ। नकली राजा चुपचाप बिना लड़ाई लड़े विदेशी राजा को राजमुकुट और राजसिंहासन सौंपकर राज-महल से भाग गया।

(गंगादीन के हाथ-पैर काँप गये। बन्दूक उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर गई। कुमार उसे उठाकर खड़ा करता है।)

कुमार : गिरो नहीं, उठो। देखो मेरे मित्र! अंग्रेज और कुछ नहीं है, महज एक व्यवस्था है। व्यवस्था के

अलावा और कुछ नहीं है इनके पास। तभी इनकी व्यवस्था विराट् है, उसी एक व्यवस्था से, अर्थ की व्यवस्था से जीवन के सारे सम्बन्ध जाल भाव बिछे हैं। इनकी हर चीज के मूल में निजी सम्पत्ति का भाव है। इसी से सब कुछ जुड़ा है। सब कुछ निकला है—शिक्षा, न्याय, कानून, शासन, इनकी सारी व्यवस्था, इनके सारे सम्बन्ध···। प्रहार करो इसी जड़ पर। क्या देख रहे हो?

गंगादीन : शून्य, केवल शून्य...बोलो अब क्या करना है?

कुमार : सन् सत्तावन में इतना-इतना तो किया गया, पर हुआ क्या?

गंगादीन : सर्वनाश।

कुमार : तो उसी तरह कुछ और करके जो शेष है, उसका भी नाश करना चाहते हो?

गंगादीन : तुम कहना क्या चाहते हो?

कुमार : देखो, उत्तेजित होकर बात और कर्म करने से विनाश के अलावा और कुछ नहीं मिलता। कर्म करना एक महत्त्वपूर्ण फलदायी चीज है। पर कर्म हो जाना बिलकुल एक दूसरी चीज है। जैसे पात्र से जल गिर जाना, बर्तन से तेल बह जाना।

गंगादीन : राजकुमार, कर्म करना और कर्म हो जाना इसका फर्क मुझे ठीक से समझाओ। कर्त्ता कौन है? कर्त्ता क्या है?

कुमार : पहले भीतर से हार का पाप भाव, पाप के लिए पश्चत्ताप, इसे काटना है। फिर हमारा

कर्त्ता जगेगा। हम सब उठेंगे। एक के उठने से कुछ नहीं होता। कुमार संभव है तभी जब सब जगेंगे और जागकर कर्त्ता बनेंगे।

(पृष्ठभूमि में शोर उभरता है। एक अंग्रेज पुलिस अधिकारी दुआशाह को गिरफ्तार किए आता है। उसके पीछे दो सिपाही, सूरजसिंह और गाँव के लोग हैं।)

दुआशाह : राम ! हे राम !! अल्लाह ! राम...।

अंग्रेज : चोप रओ। अगर फिर बोला ऐसा अल्फाज तो गोली से उड़ा दूँगा।

कुमार : 'राम' अल्फाज नहीं है, राम राम है।

गंगादीन : यहाँ कोई फकीर-साधू को गिरफ्तार नहीं कर सकता।

अंग्रेज : यह अंग्रेज सरकार है।

गंगादीन : तो आए अंग्रेज सरकार सामने, दुआशाह का जुर्म बताए।

अंग्रेज : जुर्म ? अंग्रेज को ये रावण बोलता।

कुमार : हम सब कहते हैं, अंग्रेज रावण है। चलो हम सबको गिरफ्तार करो।

(सारे लोग दुआशाह को घेरकर खड़े हो जाते हैं।)

अंग्रेज : सूरजसिंह, आर्डर दो ये लोग यहां से चले जाएं नहीं तो हम फायर करेगा।

(सूरजसिंह सबको वहाँ से हटाने का प्रयत्न करते हैं तभी अचानक यह गीत सुनाई पड़ता है।)

वंशी बजी वृन्दावन में।
सखी, रे सखी,
कैसे रहूँ घर आँगन में।
वंशी बजी वृन्दावन में।

सूरज : यह कौन गा रहा है ? बन्द करो यह गीत !

दुआशाह : मेरी बेटी हंसगौरी गा रही है।

अंग्रेज : तुम्हारा 'डाटर' ? वह गा रहा है ?

सूरज : जी सरकार।

अंग्रेज : सूरजसिंह, तुम उसे पकड़कर इधर लाओ। हम उसे अपना 'मेडसर्वेंट' बनाएगा।

(सूरजसिंह सबको देखते रह जाते हैं।)

अंग्रेज : तुमने सुना नहीं ? जमींदार अंग्रेज का कुत्ता होता, जैसे पटवारी, चौकीदार और कानूनगो जमींदार के कुत्ते होते हैं, तुम सब हमारा कुत्ता है।

(सूरजसिंह सहित सारे लोग अंग्रेज को घेरे लेते हैं।)

अंग्रेज : (गुस्से में) हम तुम सबको गिरफ्तार करता है। (राजकुमार की तरफ बढ़कर) असली जुर्म तुम्हारा है। हमारे पास सी० आई० डी० की रिपोर्ट है। तुम दुआशाह, ये गंगादीन, लोगों को हमारे खिलाफ भड़काता है।

गंगादीन : हाँ, हम सब तुम्हारे खिलाफ हैं।

(लोग अंग्रेज की तरफ बढ़ते हैं, वह पिस्तौल ताने पीछे हटने लगता है।)

कुमार : डरिए नहीं। हम आपको मारना नहीं चाहते।

सिर्फ आपको यह बताना चाहते हैं कि रावण कौन था। रावण ब्राह्मण था। ज्ञानी-महापंडित था। उसका एक ही शास्त्र था, राज्य माध्यम है अर्थ संचय और शोषण का। तभी रावण को राम ने मारा। याद रखना अंग्रेज साहब बहादुर, जैसे रावण की हार हुई, नवाबी की हार हुई, उसी तरह तुम्हारी हार, 'डिफीट' निश्चित है।

अंग्रेज : इडियट !

(चला जाता है।)

सूरज : ओह, अब समझा ! अंग्रेजों से लड़ाई हम लोगों ने लड़ी, केवल इसलिए कि हमारे अपने स्वार्थ और अहंकार पर चोट लगी थी। यह तो केवल प्रतिक्रिया थी। किसी उद्देश्य के लिए लड़ाई नहीं।

कुमार : वहाँ लड़नेवाला व्यक्ति था और हर व्यक्ति का अपना-अपना अहंकार था।

दुआशाह : उस लड़ाई के पीछे भाव नहीं, अभाव था।

गंगादीन : भाव अंग्रेजों की तरफ था। अभाव हमारी तरफ था। पर अब सच्चाई बदल रही है। भाव अब हमारी तरफ आ रहा है। अब कोई व्यक्ति नहीं लड़ेगा। लड़ेगा पुरुष, पैदल नंगे बदन चलता हुआ पुरुष, जन का समूह।

(ढिंढोरा पीटने की आवाज आती है।)

घोषणा : सुनो, सुनो-सुनो !अंग्रेज सरकार की तरफ से यह

बताने का हुक्म हुआ है, सियासी जुल्म के अन्देसे में, नजरबन्दी कानून के तहत राजकुमार को गिरफ्तार किया जा रहा है। ऐसे मौके पर राजकुमार के आसपास कोई भीड़ नहीं जमा होगी। जो ऐसा करेगा उसे सख्त सजा दी जाएगी। उसकी जमीन बेदखल कर ली जाएगी, घर कुर्क कर लिया जाएगा ! (ढिंढोरा पीटने की आवाज पृष्ठभूमि से उभर रही है। लोग चारों तरफ से राजकुमार के पास आने लगते हैं। सुबह हो रही है। सूर्य का प्रकाश छाने लगा है। सिपाहियों के साथ अंग्रेज आता है।)

अंग्रेज : हमारा आर्डर है, दो मिनट के अन्दर राजकुमार से दूर हट जाओ।

गंगादीन : हे राम !

दुआशाह : या अल्लाह, हे राम !

(सारे लोग "हे राम" दुहराते हैं। तभी सोलह-सिंगार किए हुए सिंदूर से माँग भरे, दीप-जले आरती थाल लिए हंसगौरी भीड़ को चीरती हुई राजकुमार के सामने आ खड़ी होती है। कुमार के माथे पर वह जैसे तिलक करने चलती है, अंग्रेज पिस्तौल तानकर चिल्ला पड़ता है।)

अंग्रेज : नई, ये नई होने सकता।

सूरज : (म्यान से तलवार खींचकर) इसे अब कोई नहीं रोक सकता। बेटी, तिलक करो।

(हंसगौरी राजकुमार का तिलक करती है।)

गौरी : चलो, हम सब तैयार हैं। चलो..।

(पृष्ठभूमि से वही गायन संगीत उभरता है।)

आज मोहिं रघुवर की सुधि आयी।
आगे आगे राम चलत हैं
पीछे लछिमन भाई।
बीचो-बीच चलत जानकी
महिमा बरनि न जाई।।
आज मोहिं रघुवर की सुधि आयी।।

(पर्दा)

□

प्रश्न और अभ्यास

विषय-वस्तुगत

१. "कुमार संभव है" इसका क्या अर्थ है, समझाकर लिखिये।
२. इस नाटक की कहानी अपने शब्दों में लिखिये।
३. इस नाटक का विषय क्या है, समझाकर लिखिये।
४. इस नाटक की प्रमुख घटनाओं को बताते हुए नाटक में उनके महत्त्व को समझाइए।

चरित्रगत

१. इस नाटक में गंगादीन और राजकुमार के चरित्र का महत्त्व बताइए।
२. राना बाबा के शब्दों में पुरुषार्थ क्या है ?
३. सूरजसिंह के चरित्र की क्या विशेषताएँ हैं ?
४. हंसगौरी के चरित्र के महत्त्व को बताइए।

रंग-शिल्पगत

१. इस नाटक की भाषा और संवाद-शैली पर प्रकाश डालिए।
२. इस नाटक के प्रथम अंक की विशेषताएँ बताइए।
३. इस नाटक के अंतिम दृश्य की विशेषताएँ बताइए।
४. हंसगौरी और उसके पिता सूरजसिंह के ही कारण इस नाटक का मानवीय पक्ष उजागर हुआ है, इसकी समीक्षा कीजिए।

□

नई प्रणाली के प्रश्न और अभ्यास

१. अंग्रेज और कुछ नहीं हैं, महज एक व्यवस्था है। व्यवस्था के अलावा और कुछ नहीं है इनके पास। तभी इनकी व्यवस्था विराट् है। उसी एक व्यवस्था से, अर्थ की व्यवस्था से, जीवन के सारे सम्बन्ध जाल भाव बिछे हैं। इनकी हर चीज के मूल में निजी सम्पत्ति का भाव है। इसी से ही सब कुछ जुड़ा है, सब कुछ निकला है—शिक्षा, न्याय, कानून, शासन, इनकी सारी व्यवस्था, इनके सारे सम्बन्ध।.....

अ. यह संवाद किसका, किससे है ?

आ. इस संवाद से राजकुमार के चरित्र का कौन-सा पक्ष प्रकट होता है ?

इ. इस संवाद की विशेषताएँ बताइए।

ई. इस संवाद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिये।

२. हंसगौरी : मैं उस अपशब्द को अपनी जबान पर भी नहीं ला सकती। हाँ, एक वचन देती हूँ, मैं उनसे तब तक नहीं मिलूँगी जब तक आप नहीं चाहेंगे।

सूरजसिंह : इस घर के बाहर तुम पैर नहीं रखोगी।

हंसगौरी : उनसे यही कहने के लिए सिर्फ एक बार मिलना चाहूँगी उनसे।

क. इस संवाद से हंसगौरी के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

ख. पिता और पुत्री के बीच कैसे सम्बन्ध हैं, इन संवादों के आधार पर बताइए।

ग. इन संवादों के भावार्थ लिखिये।

३. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ उदाहरण देकर लिखिये :

कन्या, आकृति, नवजात, अपशब्द, वचन, आत्मविरोध, अत्याचार, मर्यादा, प्रज्ञा, बीज, जीवनमूल्य।

४. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए।

१. गंगादीन कम्पनी का सिपाही क्यों बना ?

२. कर्नल स्लीमैन की लश्कर को देखकर राजकुमार को क्या ज्ञान मिला ?

३. हंसगौरी इतनी निर्भय क्यों है ?

४. राना बाबा की नजरों में राजकुमार का महत्त्व क्या है ?

५. कुमार सम्भव है—कैसे ?

६. राना बेनीमाधव शंकरपुर से क्यों भागे ?

७. इस नाटक का उद्देश्य क्या है ?

८. इस नाटक से क्या शिक्षा मिलती है ?

□□